राष्ट्र एवं राज्य के प्रगति पथ पर...

रायपुर एवं दुर्ग से प्रकाशित

समय दर्शन

ESTD : Since 2011

संस्थापक : स्व. श्रीमती निलिमा खड़तकर

निष्पक्ष निर्भीक खबरों के साथ

वर्ष 06, अंक 91 पृष्ठ 8, मूल्य 3.00 रूपये रायपुर, बुधवार 01 मई 2024 www.samaydarshan.in

कांग्रेस वाले मुसलमानों को रातोंरात ओबीसी बनाते हैं-मोदी

जब तक मैं जिंदा हूं, धर्म के आधार पर मुसलमानों को आरक्षण नहीं दूंगा- पीएम

मुंबई (एजेंसी)। तेलंगाना के संगारेड्डी में मंगलवार (30 अप्रैल) को पीएम मोदी ने कहा- कांग्रेस वाले मुसलमानों को रातोंरात ओबीसी बना देते हैं। हमारे तेलंगाना में जो लिंगायत, मराठा समाज के लोग हैं, उसमें 26 जातियां ऐसी हैं जो ओबीसी में जाने की मांग कर रही हैं। लंबे समय से इसपर चर्चा चल रही है। कांग्रेस वालों को मराठा, लिंगायत, इन 26 जातियों को ओबीसी बनाना मंजूर नहीं है।

जब तक मैं जिंदा हूं, स्ष्ट, स्ञ और ओबीसी की कीमत पर धर्म के आधार पर मुसलमानों को आरक्षण नहीं देंगे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंगलवार को महाराष्ट्र और तेलंगाना के दौरे पर हैं। संगारेड्डी से पहले वे महाराष्ट्र के धाराशिव, माढा और लातूर में सभाएं कर चुके हैं।

कांग्रेस का पंजा जनता का पैसा लूटता था

मोदी ने माढा में कहा- कांग्रेस का पंजा जनता का पैसा लूटता था। जिसके पास 400 सांसद थे, अब वो 250 लोगों को चुनाव भी नहीं लड़वा पा रही है।

आपको कांग्रेस के एक्सरे से सावधान रहना है। कांग्रेस के शहजादे गली-गली घूमकर कह रहे हैं कि उनको मौका मिलेगा तो वो आपका एक्सरे निकालेंगे। आपके घर में पड़े सोने और संपत्ति का ये हिसाब लगाएंगे। इसके बाद इसे बांट देंगे।

कांग्रेस वाले विरासत टैक्स की भी बात कर रहे हैं। कांग्रेस कहती है कि जो आप बचत करते हैं उस पर सरकार का भी हक होगा। ये मार्क्सवादियों और नक्सलवादियों की विचारधारा है।

प्रधानमंत्री मोदी शाम को तेलंगाना के जहीराबाद में जनसभा को संबोधित करेंगे। मोदी ने 29 अप्रैल को महाराष्ट्र के सोलापुर, सातारा, पुणे और कर्नाटक के बागलकोट में रैलियां की थीं।

10 साल पहले, जब रिमोट कंट्रोल वाली सरकार चलती थी, तब महाराष्ट्र के कद्दावर नेता कृषि मंत्री थे। जब यहां के कद्दावर नेता दिल्ली में राज करते थे, तब गन्ने का स्न्नक्क करीब 200 रुपए था और आज मोदी के सेवाकाल में गन्ने का स्न्नक्क करीब 350 रुपए है।

आज अयोध्या में 500 साल के बाद भव्य राम मंदिर बना है। राम मंदिर बनने से हर कोई खुश है। अंग्रेजों के जाने के बाद पहले ही दिन राम मंदिर का काम शुरू होना चाहिए। कांग्रेस की वोटबैंक की राजनीति के कारण ये लटका रहा। उन्होंने आपकी आस्था की चिंता नहीं की। कांग्रेस के पास मौका था, लेकिन उन्होंने सिर्फ रुकावटें पैदा कीं। कांग्रेस वाले कहते थे कि राम मंदिर बनेगा तो आग लग जाएगी। कोई आग लगी क्या। आपके वोट के कारण 500 साल का इंतजार खत्म हुआ है। जब देश में मजबूत सरकार होती है। तो उसका ध्यान वर्तमान के साथ ही भविष्य की योजनाओं पर भी होता है। यही सोचकर आज भाजपा सरकार रेल-रोड एयरपोर्ट पर अभूतपूर्व खर्च कर रही है। कांग्रेस ने 10 साल में जितना खर्च किया उतना आज हम 1 साल में खर्च कर रहे हैं। 80 करोड़ देशवासियों को उनकी थाली भरी हुई रहती है। उनका चूल्हा जलता रहता है। आज 80 करोड़ लोगों को मुफ्त खाना मिलता है। इसका पुण्य आपको मिलता है। जिनके पास कभी 400 एमपी होते थे वो पार्टी आज 250-300 लोगों को चुनाव भी नहीं लड़वा पा रही है। अगर सरकार बनानी हो तो 272 सीटें तो चाहिए। जो सरकार बनाने के लिए नहीं लड़ रहे हैं उनके लिए आप वोट बर्बाद मत कीजिए। विकसित भारत बनाने में देश की नारी शक्ति की बहुत बड़ी भूमिका है।

मोहब्बत की दुकान में फेक वीडियो बिक रहे-मोदी

धाराशिव में पीएम मोदी ने कहा- जो विरोधी भाजपा सरकार का मुकाबला नहीं कर पा रहे, वे सोशल मीडिया पर फर्जी वीडियो चलाकर तकनीक का गलत इस्तेमाल कर रहे हैं। अब उनकी हालत ऐसी है कि जब उनका झूठ काम नहीं कर रहा तो वे मेरे चेहरे का इस्तेमाल कर रहे हैं और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से अपनी मोहब्बत की दुकान में फेक वीडियो बेच रहे हैं। झूठ की यह दुकान बंद होनी चाहिए। मोदी ने कहा- हमारी सरकार दुनियाभर में बाजरा को लोकप्रिय बनाने पर जोर दे रही है। मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि बाजरा दुनियाभर में खाने की मेज तक पहुंचे। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने मेरे लिए राजकीय रात्रिभोज दिया था, उसके मेन्यू में बाजरा था।

महालक्ष्मी योजना में हर महीने 8500 मिलेंगे:हम महिलाओं को लखपति बनाएंगे- राहुल

6 महीने में 30 लाख सरकारी पद भरेंगे

भिंड (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भिंड में कहा, मोदी जी अरबपतियों को पैसा देते हैं तो कहते हैं विकास हो रहा है। जितना उन्होंने 10 साल में उनको दिया, हम आपको देने जा रहे हैं। महालक्ष्मी योजना के तहत देशभर की गरीब महिलाओं को लखपति बनाएंगे। हर महीने उनके खाते में 8500 रुपए डाले जाएंगे। 6 महीने में 30 लाख सरकारी पद भरे जाएंगे।

राहुल गांधी ने भिंड-दतिया लोकसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी फूल सिंह बरैया के पक्ष में एमजेएस मैदान पर चुनावी सभा की। राहुल ने हाथ में संविधान लेकर कहा- ये मामूली किताब नहीं है। आजादी के पास किसानों, गरीबों, मजदूरों,

पिछड़ों, आदिवासियों को जो भी कुछ मिला है इस किताब के कारण मिला है। अब पीएम ने अमित शाह ने और उनके सांसदों ने मन बना लिया है कि वो चुनाव जीतेंगे तो इस किताब को फाड़कर फेंक देंगे।

30 लाख सरकारी पद खाली, हम 6 महीने में भर देंगे- राहुल

30 सरकारी लाख पद खाली पड़े हैं। हम 6 महीने में आपके हवाले कर देंगे। सेना में युवा जाते हैं। सबसे ज्यादा भिंड से। मोदी जी ने दो तरह के जवान बना दिए। एक को कैंटीन और अच्छी सैलरी मिलेगी। दूसरा जिसे ये नहीं मिलेंगे। एक को जवान दूसरे को अग्निवीर कहते हैं।

आप सोचिए दो लोगों को युद्ध में भेज रहे हो, एक से कह रहे हो आपको कुछ हुआ तो हम आपके परिवार की रक्षा करेंगे। और दूसरे जवान से कह रहे हैं, आपको कुछ हुआ तो कोई पेंशन और मदद नहीं मिलेगी। शहीद का दर्जा भी नहीं मिलेगा। मोदी जी ने सेना का अपमान किया है।

हमारी सरकार हर ग्रेजुएट को अप्रेंटिसशिप कराएगी

अरबपतियों के बेटे अपने पिता की कंपनियों में अप्रेंटिसशिप करते हैं, उनको पैसा मिलता है। ये उनको कंपनी में डालने का मौका होता है। हमारी सरकार दुनिया की पहली सरकार होगी जो हर ग्रेजुएट को ये अधिकार देने जा रही है। आप

अमित शाह फेक वीडियो केस: 2 गिरफ्तार

अहमदाबाद। अमित शाह फेक वीडियो केस में मंगलवार 30 मई को गुजरात के अहमदाबाद से 2 लोगों को गिरफ्तार किया गया। एक आरोपी कांग्रेस विधायक जिग्नेश मेवाणी का पीए और दूसरा आप कार्यकर्ता है। इस केस में सोमवार 29 अप्रैल को भी असम से एक आरोपी गिरफ्तार किया गया था।

वहीं, दिल्ली पुलिस की यूनिट इंटेलिजेंस फ्यूजन एंड स्ट्रैटजिक ऑपरेशंस ने इस मामले में 16 लोगों को समन भेजा है। ये सभी 7-8 राज्यों से हैं। तेलंगाना के सीएम रेवंत रेड्डी को 29 अप्रैल को ही समन भेजा जा चुका है। इन सभी लोगों को 1 मई को दिल्ली में आईएफएसओ यूनिट में पेश होना होगा। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, 16 में से 6 लोग तेलंगाना कांग्रेस के सदस्य हैं, जिनमें मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी भी शामिल हैं।

नातिन, बेटी सहित पति पत्नी और मवेशी को ट्रक ने कुचला

भीषण हादसे में एक ही परिवार के 4 की मौत

शादी समारोह में जाने कर रहे थे बस का इंतज़ार

राजनांदगांव (समय दर्शन)। खैरागढ़ स्टेट हाईवे पर एक भीषण हादसे में एक बुजुर्ग दंपति, उनकी बेटी और नातिन की मौत हो गई। शाम लगभग 4.40 बजे जब परिवार सड़क किनारे बस का इंतजार कर रहा था तब अनियंत्रित ट्रक ने उन्हें चपेट में ले लिया। सभी की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि ट्रक चालक मौके से वाहन लेकर फरार हो गया। इस हादसे में एक मवेशी की भी मौत हुई है। हादसे के बाद ग्रामीणों ने सड़क पर चक ?का जाम कर दिया।

मंगलवार की शाम ग्राम तिलई निवासी पूनाराम सिन्हा (65) अपनी पत ?नी गणेशिया बाई (60), बेटी तिजबती (40) और नातिन पल ?लवी (15) के साथ ग्राम टप्पा में किसी मांगलिक कार्यक्रम में शामिल होने घर से निकले थे। यहां वे सड़क किनारे परिवार के साथ बस का इंतजार कर रहे थे। इस बीच ही राजनांदगांव से खैरागढ़ की ओर जा रहे अज्ञात ट्रक ने पूरे परिवार को चपेट में ले लिया। हादसे का शिकार हुए लोगों को जरा भी भनक नहीं लग सकी और वो खुद को बचाने का प्रयास भी नहीं कर सके। यहीं मौजूद एक मवेशी की भी चपेट में आने से मौत हो गई।

इस घटना के बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने स्टेटहाईवे में चक्काजाम कर दिया। मौके पर तत्काल कोतवाली पुलिस प्रभारी ऐमन साहू, चौकी चिखली प्रभारी नरेश कुमार दलबल के साथ मौके पर पहुंचे। ग्रामीणों ने लगातार हो रही दुर्घटनाओं को लेकर यहां शवों को उठाने भी नहीं दिया। प्रशासन उन्हें समझाने मशक्कत करता रहा। ग्रामीणों ने कहा कि, संकरी सड़क और भारी वाहनों के बेतरतीब आवाजाही के चलते यह हादसा हुआ है। प्रशासन को पहले यहां व्यवस्था सुनिश्चित करने के साथ मृतकों के लिए मुआवजा देना चाहिए। ग्रामीणों ने सड़क पर बाईक खड़ी कर दी जबकि महिलाएं सड़क पर बैठक प्रदर्शन करती रही। वहीं इस घटना से सिन्?हा परिवार पर दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा है। घटना की जानकारी मृतक पूनाराम के पुत्र राजेंद्र सिन्हा को दी गई तो वे कुछ देर के लिए अचेत हो गए। ग्रामीणों ने बताया कि मृतक परिवार रोजी रोटी के लिए चंद्रपुर में काम करता है।

रात को अंधेरा होते ही सक्रिय हो जाते है मुरुम माफिया, उत्तर पाटन के गांवों में चल रहा है अवैध मुरुम उत्खनन का खेल

खनिज व राजस्व महकमा बेखबर

बलराम यादव/समय दर्शन

खेत बनाने के नाम पर कर रहे एग्रीमेंट

पाटन। पाटन क्षेत्र के चारो तरफ मुरुम माफिआओं द्वारा दिन रात मुरुम की अवैध खनन किया जा रहा है। जिला खनिज विभाग के तथा स्थानीय मुख्यालय के जिम्मेदारी अधिकारियों का भी इस तरफध्यान नही है। अब तो मुरुम माफियाओं द्वारा खुलेआम मुरुम का अवैध उत्खनन करते देखा जा सकता है।

उत्तर पाटन के अमेरि, करगा, गभरा, तर्रा, कोपेडीह , दक्षिण पाटन के गुजरा, असोगा रानितराई क्षेत्र , मध्य पाटन के राखी, लोहरसी सहित अन्य ग्रामो को मुरुम उत्खनन किया जा रहा है। अभी सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार उत्तर पाटन के ग्राम गभरा, अमेरि, गुजरा, बटंग, खुड़मुड़ा तरफ ज्यादा मुरुम खनन की जानकारी है । इन पर नजर तो सबका का है लेकिन

शासकीय कार्य के नाम पर खुदाई, पर बेच रहे है मुरुम

मुरुम खुदाई करने वालों के द्वारा बकायदा शासकीय कार्य पर मुरुम की सप्लाई किए जाने की बात कही जाती है। सड़क निर्माण के नाम पर ज्यादातर मुरुम खुदाई हो रही है । हाईवा में शासकीय कार्य पर प्रयुक्त वाहन भी लिखा हुआ पोस्टर दिख जाता है। लेकिन जब हमारे सूत्रों से पता लगाया गया तो पता चला कि शासकीय कार्य के नाम पर मुरुम की खुदाई तो जरूर हो रही है लेकिन शासकीय कार्य पर ना जाकर मुरुम को सीधे तौर पर बेच भी रहे हैं। अगर ग्रामीण इस पर पूछताछ कर करते हैं तो फ़िर सड़क निर्माण के लिए उपुयोग करने लगते है। कुछ दिन बाद फिर से वही पुराने ढर्रे शुरू हो जाता है।

कार्रवाई नही होने से मुरुम माफ़िआओं के हौसला बढ़ रहा है।

मुरूम उत्खनन के लिए मुरूम माफियाओं के द्वारा किसानों के साथ उनके खेत को समतल व और गहरा बनाने के लिए एग्रीमेंट किया जाता है। बताया जाता है कि इस एग्रीमेंट में 3 फीट गहरा खोदने का किसानों के साथ एग्रीमेंट रहता है। लेकिन खनन करने वालो के द्वारा किसानों के खेत को 4 से लेकर 6 फीट तक की गहरा कर दिया जाता है ।

इसके बाद उसमें काली मिट्टी डालने के नाम पर सिर्फ ऊपरी परत ही काली मिट्टी की बिछा दी जाती है। जब किसान अपने खेत को देखता है तो वह ठगा सा महसूस करता है। मुरुम माफ़िआ मुरूम लेकर अपना काम तो निकाल लेते हैं उसके बाद किसान को खेत में खेती के लिए परेशान होना पड़ता है।। बताया जाता है कि कुछ-कुछ किसान मुरूम खुदवाने के लिए पैसा भी लेते हैं ।

शासकीय जमीन पर नजर गड़ाए है माफिया

उत्तर पाटन क्षेत्र में ज्यादातर मुरुम की खुदाई अवैध रूप से हो रही है। इसमे ज्यादातर खनन रात के अंधेरे में किया जाता है। मुरुम माफियाओं द्वारा शासकीय जमीन को निशाना बनाया जा रहा है। रात को खुदाई कर परिवहन करवा लेते है।

केजरीवाल की याचिका पर सुनवाई, सुप्रीम कोर्ट ने गिरफ्तारी के समय को लेकर

ईडी से पूछा सवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को लोकसभा चुनाव से पहले दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के समय को लेकर प्रवर्तन निदेशालय से सवाल किया। कोर्ट ने इस बाबत जांच एजेंसी से जवाब मांगा है। जस्टिस संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता की पीठ ने अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू से सवाल पर जवाब मांगते हुए कहा कि जीवन और स्वतंत्रता बेहद महत्वपूर्ण हैं। आप इससे इनकार नहीं कर सकते।

पीठ ने राजू से कई अन्य सवाल भी पूछे। कोर्ट ने जांच एजेंसी से केजरीवाल की उस याचिका पर भी अगली सुनवाई पर जवाब देने को कहा, जिसमें उन्होंने उत्पाद शुल्क नीति घोटाले से संबंधित मनी लॉन्ड्रिंग मामले में उनकी गिरफ्तारी को चुनौती दी है। मामले की सुनवाई शुक्रवार को हो सकती है। इससे पहले सोमवार को केजरीवाल की

याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने पूछा था कि आपने ट्रायल कोर्ट के समक्ष याचिका दायर क्यों नहीं की? जिस पर केजरीवाल के वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि इसके कई कारण हैं, जिनमें से एक ये है कि केजरीवाल की गिरफ्तारी ही अवैध है।

सीएम केजरीवाल ने गिरफ्तारी को बताया अवैध

दिल्ली के शराब नीति घोटाले में फंसे दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर कहा है कि उनकी गिरफ्तारी अवैध है और उनकी हिरासत भी अवैध है। आम चुनाव से पहले राजनीति के तहत ये किया जा रहा है। केजरीवाल ने अपनी याचिका में कहा कि एक राजनीतिक पार्टी को खत्म करने और एक चुनी हुई सरकार को गिराने के लिए यह कोशिश की जा रही है। जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस दीपांकर दत्ता की पीठ याचिका पर सुनवाई कर रही है। सोमवार को सुनवाई के दौरान अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि किसी को भी केवल अपराध के सबूत मिलने पर ही गिरफ्तार किया जा सकता है, सिर्फसंदेह के आधार पर नहीं। जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस दीपांकर दत्ता की पीठ याचिका पर सुनवाई कर रही है। सोमवार को सुनवाई के दौरान अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि किसी को भी केवल अपराध के सबूत मिलने पर ही गिरफ्तार किया जा सकता है, सिर्फ संदेह के आधार पर नहीं। कोर्ट ने बार-बार समन जारी होने के बावजूद भी केजरीवाल के पूछताछ के लिए पेश न होने पर सवाल उठाया और कहा कि ऐसी स्थिति में जांच अधिकारियों के पास क्या रास्ता था?

संक्षिप्त समाचार

जांजगीर नैला नगर पालिका के वार्ड क्रमांक 10 में जनसंपर्क एवं नुक्कड़ सभा संपन्न

जांजगीर (समय दर्शन)। भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती शालिनी राजपूत का जनसंपर्क एवं नुक्कड़ सभा संपन्न जिसमें प्रमुख रूप से प्रदेश महिला कार्य समिति सदस्य श्रीमती नंदनी मीरा मिहिर पतकी राजवाड़े जिला महामंत्री महिला मोर्चा श्रीमती संतोषी दुबे महिला मोर्चा मंडल अध्यक्ष श्रीमती प्रेमलता कौशिक पूनम तिवारी श्रीमती विद्या राठौड़ नगर मंत्री अनिल शर्मा अनुसूचित जनजाति मोर्चा से गजानंद ध्रुव पूर्व पार्षद रमेश सोनवानी वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता प्रवीण अग्रवाल युवा मोर्चा के गोलू दुबे योगेश चौरसिया हरी सोनवानी गज्जू कर्ष प्रदीप राठौर एवं वार्ड की माताएं बहनें एवं वार्ड के प्रमुख वरिष्ठ जन उपस्थित रहे।

ग्रामीणों के हक की पीडीएस चावल की बड़ी हेरा-फेरी

सरायपाली(समय दर्शन)। यह पूरा मामला महासमुंद जिला के सरायपाली तहसील अन्तर्गत ग्राम पंचायत जगल बेड़ा का है यहां का सेल्समेन अनिल प्रधान ने मार्च महीने का फिंगर ले लिया है और चावल का आबंटन नही किया है और वहा का सेल्समेन चावल का गमन कर फरार हो गया है। ग्रामीणों और सरपंच का कहना है की सेल्समेन अनिल प्रधान के द्वारा चावल देने का झांसा देकर फिंगर ले लिया। और एसडीएम से शिकायत करने पर आश्वाशन दिए है की मार्च महीने का चावल देने और सेल्समेन अनिल प्रधान पर उचित कार्यवाही किया जाएगा।

दुष्कर्म के फरार आरोपी राकेश कुमार को भेजा गया जेल

दंतेवाड़ा (समय दर्शन)। गौरव राय पुलिस अधीक्षक दन्तेवाड़ा, आर. के. बर्मन अति. पुलिस अधीक्षक दन्तेवाड़ा के निर्देशन में एवं कपिल चंद्रा पुलिस अनुविभागीय अधिकारी किरन्दुल के मार्ग दर्शन में थाना- किरन्दुल के अपराध क्रमांक 18/2024 धारा- 376(2)भादवि. 3(2)(1) के घटना दिनांक से फरार आरोपी- राकेश के.आर. पिता के. पी. राजन उम्र 38 वर्ष साकिन- कॉलोनी किरन्दुल थाना - किरन्दुल जिला दक्षिण बस्तर दन्तेवाड़ा को पता तलाश कर उसके सकुनत से 29.04.2024 को 12.35 बजे गिरफ्तार किया जाकर न्यायालय के समक्ष पेश किया गया जिसका न्यायालय द्वारा जेल वारंट जारी करने पर जिला जेल दन्तेवाड़ा दाखिल कराया गया है। कार्यवाही में पुलिस अनुविभागीय अधिकारी कपिल चंद्रा, निरीक्षक प्रहलाद कुमार साहू (थाना प्रभारी किरन्दुल), उप निरीक्षक दीनानाथ वैष्णव, प्र.आर. हरीराम सिन्हा, प्र. आर. नरेश मंडल, आरक्षक भोजराम ध्रुव की विशेष भूमिका रही।

महिमा हॉस्पिटल उतई के चिकित्सकों, स्टाफ नर्स सहित पूरे स्टाफ ने लिया मतदान का संकल्प

उतई (समय दर्शन)। महिमा हॉस्पिटल उतई के दंत चिकित्सक डॉक्टर कामता साहू एवं श्री देश दीपक सिंह द्वारा मतदाता जागरूकता अभियान के तहत महिमा हॉस्पिटल में कार्यरत सभी कर्मचारियों को मतदान करने हेतु अपील किया तथा सभी को अपने मत का ताकत एवं अधिकार के संबंध में जागरूक करते हुए पूर्ण रूप से मतदान करने का लिए प्रेरित किया गया इस कार्यक्रम में डा.गंगा प्रसाद साहू,छम्मन लाल निर्मलकर,ललित कुमार साहू, चेतना साहू,करुणा,माही साहू, पल्लवी साहू, राजेश्वरी, शिवानी मंडल , चंचल साहू, रूपेश कुमार ,मानसिंग साहू, वर्षा वर्मा, रमा वर्मा, अनीता साहू, मुख्य रूप से उपस्थित थे तथा कार्यक्रम के अंत में मतदान हेतु सभी उपस्थित जनों को शपथ दिलाई गई।

वरिष्ठ कांग्रेसी लक्ष्मीकांत पाण्डेय के मार्गदर्शन में शुभम दुबे और खगेन्द्र दुबे ने की भाजपा में घर वापसी

सरसींवा (समय दर्शन)। भाजपा की रीति नीति से प्रभावित होकर आज दिनांक 30 अप्रैल को माता शबरी के धाम शिवरीनारायण में आयोजित विजय संकल्प रैली में उपस्थित प्रदेश के मुखिया विष्णुदेव साय ,उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा एवं अन्य वरिष्ठ भाजपा के दिग्गज नेताओं के समक्ष कांग्रेस के वरिष्ठ नेता लक्ष्मीकांत पाण्डेय के मार्गदर्शन में शुभम दुबे एवं खगेन्द्र दुबे ने की भाजपा में घर वापसी, वही साथ मे दर्जनों कांग्रेसी समर्थक हुए भाजपा में शामिल। इस अवसर पर शुभम दुबे ने कहा कि जब से उन्होंने राजनीति में कदम रखा तब से वे भाजपा के विभिन्न पदों का निर्वहन और जनसेवा का कार्य करते रहे । पर उनके राजनैतिक जीवन में तब सबसे विषम परिस्थिति आई जब सत्ता परिवर्तन हुआ । जब छत्तीसगढ़ में 2019 में सत्ता

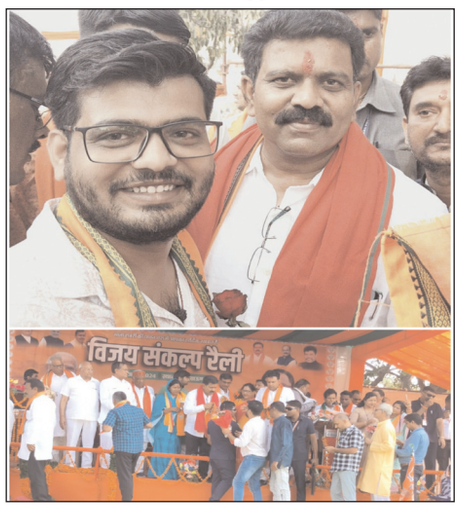

परिवर्तन हुआ तब श्री दुबे को तरह तरह की कठिनाइयों, प्रताड़ना और दबाव का सामना करना पड़ा और तत्कालीन सत्ता के दबाव और प्रताड़ना के चलते उन्हें पार्टी छोड़कर कांग्रेस में जाना पड़ा और कहा जाए तो एक प्रकार से उनकी राजनैतिक हत्या कर दी गई । श्री दुबे ने बताया कि कांग्रेस के कुशासन और भ्रष्ट नीतियों, गुंडागर्दी से सभी परिचित है भले ही उन्हें सत्ता के दबाव और प्रताड़ना से विवष होकर कांग्रेस में जाना पड़ा पर कभी वे भाजपा से अलग नही हो पाए तत्कालीन सत्ता ने दबाव पूर्वक कांग्रेस में तो उन्हें ले गई पर उनका हृदय परिवर्तन न करा सकी । वे हमेशा तन मन धन से भाजपा से जुड़े और बीते विधानसभा चुनाव में भी पूरी सक्रियता से भाजपा के पक्ष में कार्य किया जिसके प्रत्यक्ष प्रमाण बिलाईगढ़ विधानसभा के प्रभारियों के पास सुरक्षित है । श्री दुबे कहा कि उन्होंने कांग्रेस की सत्ता आने के बाद ही गंदी राजनीति,भ्रष्टाचार और गुंडागर्दी को अपने असल जीवन में देखा और अंतर्मन से विवश और क्षुब्ध रहे। शिवरीनारायण में आयोजित विजय संकल्प रैली में वरिष्ठ कांग्रेस नेता लक्ष्मीकांत पाण्डेय के मार्गदर्शन में मुख्यरूप से खगेन्द्र दुबे,शुभम दुबे,वरिष्ठ कांग्रेसी प्रेमलाल पाठक,कौशलेश्वर दुबे,किसान शुक्ला,संजय शर्मा,कन्हैया नामदेव श्याम चंद्रा ,संतोसी तेंदुलकर,बसंती कुमार गब्बर सहित दर्जन भर से अधिक कांग्रेसियों ने बीजेपी में प्रवेश किया । इस अवसर पर श्री पाण्डेय ने कहा कि उनके नेतृत्व में अभी क्षेत्र से हजारों की संख्या में और भी युवा,महिला पुरुष बीजेपी में शामिल होंगे ।

अमित शाह के फेक वीडियो पर कार्रवाई के लिए थाने पहुंचे भाजपाई

जांजगीर (समय दर्शन)। भारत के गृह व सहकारिता मंत्री अमित शाह के भाषण को छेड़छाड़ करने वालों के खिलाफ में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता लोकसभा प्रत्याशी श्रीमती कमलेश जांगड़े के नेतृत्व में रिपोर्ट दर्ज कराने थाना जांजगीर पहुँचे भाजपा कार्यकर्ता अपने चुनाव प्रचार के दौरान अमित शाह के मुल भाषण को कुटरचना कर उसको सोशल मीडिया में वायरल कर चुनाव को प्रभावित करने का प्रयास किया जा रहा है जब अमित शाह आरक्षण के विषय पर यह बोल रहे थे की देश मे अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग को जिस तरह आरक्षण पहले दिया जा रहा था वैसे ही भाजपा की केन्द्र मे सरकार बनने के बाद हम देंगे। विगत दिनो अमित शाह के मूल भाषण को कुटरचना कर जिस भाषण को सोशल मीडिया पर वायरल किया गया है वो शत प्रतिशत झुठा व गलत है। उक्त विषय को लेकर पार्टी ने ग़लत वीडियो वायरल करने वालों के खिलाफ में आज भाजपा जाँजगीर चाम्पा लोकसभा के कार्यकर्ता थाना जांजगीर पहुँचे और उनके खिलाफ में कड़ी से कड़ी कार्यवाही करने का आवेदन पत्र थाना प्रभारी जांजगीर को दिया कमलेश जांगड़े के साथ में रिपोर्ट दर्ज कराने वालो में पूर्व नेता प्रतिपक्ष नारायण चंदेल, सोशल मीडिया प्रदेश प्रभारी प्रशांत सिंह ठाकुर, रवि पांडेय, अभिमन्यु राठौर, जितेंद्र देवांगन, पंकज अग्रवाल, मनोज मिश्रा, शिवचमन सिंह, प्रदीप सोनी, दिनेश राठौर, अनिल शर्मा, सोनू यादव, रितेश अग्रवाल सहित प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथी उपस्थित थे।

शासकीय प्राथमिक शाला बंसुला का वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित

बसना (समय दर्शन)। शासकीय प्राथमिक शाला बंसूला मे सत्र 2023-24 का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया । यहां कुल 112 बच्चे दर्ज थे, जिसमें से कुल 107 बच्चे परीक्षा में शामिल हुए। पांच बच्चे अनुपस्थित रहे । परीक्षा मे भाग लेने वाले सभी बच्चे परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। विद्यालय का परीक्षा फल 100 प्रतिशत रहा। परीक्षा फल इस प्रकार रहा। पहली में प्रथम कुमारी देवीका साव 97 प्रतिशत, द्वितीय निशा साव 95 प्रतिशत, तृतीय जोया बरिहा 94 प्रतिशत ,। दूसरी में प्रथम चैतन्य सागर 96.5 प्रतिशत, द्वितीय नेहा साव 96 प्रतिशत तृतीय सौम्य दीप एवम् ममता साहू 94 प्रतिशत, तीसरी में प्रथम उर्मी साहू 98 प्रतिशत, द्वितीय दीपांजलि 96 प्रतिशत, तृतीय श्रद्धा प्रजापति 95 प्रतिशत, चौथी में प्रथम भावना साव 97 प्रतिशत, रेणुका साव 96 प्रतिशत, शौर्य भट्ट 92 प्रतिशत, पांचवीं में प्रथम सूरज चौहान 94 प्रतिशत, द्वितीय शीतांसु सागर 93 प्रतिशत, सैमुअल, लिलंद्री, साखी साव तीनों 91 प्रतिशत अंक प्राप्त कर कक्षा में तृतीय स्थान प्राप्त किए। कुमारी लाडली नाग पूरे विद्यालय में सबसे अधिक उपस्थित होकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। सभी कक्षाओं में स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को पूर्व प्रधान पाठक रमेश चंद्र शर्मा सर के द्वारा प्रवेश उत्सव के समय पुरस्कृत करने की घोषणा किया गया । इस अवसर पर शाला विकास समिति के पदाधिकारी चमेली सागर, नरेंद्र यादव, प्रधान पाठक प्रवीर कुमार बेहेरा, अनिता साहू, सीता साहू, पुष्पांजलि बगर्ती आदि सभी अतिथियों व गुरूजनो ने छात्र-छात्राओं को आशीर्वाद व शुभकामनाएं प्रदान किया।

विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल का बिलाईगढ विधानसभा में तुफानी जनसंपर्क

बसना(समय दर्शन)। बसना विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल ने भाजपा पदाधिकारियों के साथ जांजगीर-चांपा लोकसभा क्षेत्र के बिलाईगढ विधानसभा अंतर्गत भाजपा मण्डल बया के ग्राम सुरबाय एवं सैहाभांठा में जनसंपर्क अभियान चलाकर भाजपा प्रत्याशी श्रीमती कमलेश जांगड़े के पक्ष में मतदान करने की अपील किए। जहां सैकड़ों ग्रामीणों ने विधायक डॉ सम्पत अग्रवाल का फुलमाला पहनाकर स्वागत किया तथा अबकी बार मोदी सरकार, अबकी बार 400 पार, सबका साथ सबका विकास सबका विश्वास के नारों को भरपूर समर्थन देते हुए मातृशक्ति सहित ग्रामीणजनों ने नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने की संकल्पित भाव से भाजपा को जीत का आशीर्वाद दिया।

मजबूत हाथों में है देश की कमान- विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल- जनसंपर्क अभियान को संबोधित करते हुए विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के गारंटी को दोहराते हुए कहा आज देश का कमान मजबूत हाथों में है। मोदी जी के जनहित व कल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचा है। आज पूरी दुनिया भारत को सम्मान की नजरों से देखता है, पूरा विश्व भारत पर आश लगाए बैठा है। नरेन्द्र मोदी जी के 10 वर्षों के कार्यकाल में देश भरपूर विकास कार्य हुए हैं साथ ही देशवासियों के जीवन में अनेक बदलाव आया है। नरेन्द्र मोदी जी जब तीसरी बार प्रधानमंत्री बनेंगे तो और अनेकों जनकल्याणकारी योजनाएं हैं जो भारत का तस्वीर बदल देगा। विधायक ने प्रधानमंत्री आवास योजना, आयुष्मान भारत योजना, मुफ्त राशन, महतारी वंदन योजना, उज्ज्वला योजना समेत अन्य योजनाओं को विस्तार बताए। इस दौरान बया मण्डल अध्यक्ष देवानंद नायक, वरिष्ठ भाजपा नेता कैलाश अग्रवाल, विधायक कार्यालय पिथौरा प्रभारी छबीलाल रात्रे, संजय गोयल, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मन्नुलाल ठाकुर,शक्ति केंद्र प्रभारी टहकराम साहू, मिडिया प्रभारी विकास अग्रवाल, महामंत्री वेदराम बरिहा, अजजा मोर्चा अध्यक्ष मोहन नेताम, कसडोल मण्डल पूर्व अध्यक्ष बेनूराम यादव, जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि सरजु तिवारी सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणजन मौजूद थे।

गायत्री शक्ति पीठ बसना मे डॉ.अरुणा अग्रवाल के नेतृत्व में समर कैंप का आयोजन

बसना(समय दर्शन)। बसना मे मारवाड़ी युवा मंच तथा उन्नति शाखा द्वारा समय समय मे सामाजिक व धार्मिक उन्नयन के निमित्त रचनात्मक कार्य शैली से ओतप्रोत कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं । इसी तारतम्य में अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की बाल विकास प्रमुख डॉ अरुणा अग्रवाल के द्वारा स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ पदमपुर रोड बसना में बच्चों के लिए समर कैंप का आयोजन किया गया । समर कैंप में प्राकृतिक मिट्टी से मॉडल बनाना.. जैसे पेड़,गणेश जी की मूर्ति, गिलास,कटोरी एवं अन्य खिलौने बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह प्रशिक्षण आगामी 3 मई तक अनवरत चलेगा । यह प्रशिक्षण मिट्टी की मूर्तियां बनाने के एक्सपर्ट बेहरा जी द्वारा दिया जा रहा है। कैंप में 3 वर्ष से लेकर 15 वर्ष तक के बच्चों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं । लगभग 50 बच्चों ने अभी तक रजिस्ट्रेशन करवाया है। प्रशिक्षण चार दिन के लिए दिया जा रहा है,, चौथे दिन बच्चों के बीच कंपटीशन रखा जाएगा एवं अच्छे प्रदर्शन करने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया जाएगा । अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की बाल विकास प्रमुख डॉक्टर अरुणा अग्रवाल ने बताया कि, आजकल जहाँ बच्चे केवल मोबाइल और टीवी मे लगे रहते हैं,,वहीं बच्चों को अब इस तरह की रचनात्मक दिशा की ओर प्रेरित करने व नई एक्टिविटी के साथ ,आत्मनिर्भर होकर कुछ चीजें बनाने , सीखना, जानना बहुत आवश्यक है! समर क्लास में बच्चों की रुचि देखकर ऐसा लगा जैसे हमारा बचपन वापस आ गया हो! इस शिविर में मुख्य रूप से डॉक्टर अरुणा अग्रवाल,श्रीमती मीना अग्रवाल,श्रीमती अंजना,श्रीमती राखी, श्रीमती सरिता, श्रीमती पायल,श्रीमती माला, श्रीमती श्वेता अग्रवाल एवं बसना मारवाड़ी महिला मंडल का सहयोग रहा । डॉ. अरुणा अग्रवाल ने बताया कि,आगे भी इस तरह की नई एक्टिविटी के साथ नया आयोजन किया जावेगा ।

कथा वाचक कृष्ण कुमार तिवारी ने धर्म, अर्थ, कर्म व मोक्ष की महत्ता पर विस्तार से कथा सुनाई

बोरिद में भागवत कथा का तीसरा दिन

पाटन (समय दर्शन)। ग्राम बोरिद में आयोजित संगीतमय श्रीमद भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ कथा के तीसरा प्रह्लाद चरित्र, अजामल कथा, वाराह अवतार की कथा सुनाई गई। कथा आचार्य कृष्ण कुमार तिवारी ने धर्म,अर्थ, कर्म व मोक्ष की महत्ता पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सत्य और असत्य कर्म है । असत्य कर्म से पतन होता है और नरक की तरफ व्यक्ति जाता है और सत्य से स्वर्ग में प्रवेश करता है जहां सुख शांति मिलती है । उन्होंने प्रहलाद चरित्र में भक्ति की प्रधानता ईश्वर सिद्धि के रूप में बताते हुए कहा कि राजा हिरणाकश्यप खुद को भगवान समझता था। प्रजा को भी वह उन्हें भगवान मानने के लिए दबाव डालता था। लेकिन हिरणाकश्यप का पुत्र प्रहलाद विष्णु को ही भगवान मानता था। प्रहलाद के इस भक्ति भाव से हिरणाकश्यप नाराज था। एक दिन हिरणाकश्यप ने प्रहलाद से पूछा कि तुम्हारा भगवान विष्णु कहां रहता है। प्रहलाद ने एक खंभे की ओर इशारा करके कहा कि मेरा भगवान हर जगह है। आक्रोश में आकर हिरणाकश्यप ने उस खंभे को तोड़ने का प्रयास किया। इसके बाद खंभे से भगवान श्री विष्णु नरसिंह अवतार में प्रकट हुए और उन्होंने हिरणाकश्यप का वध किया। ईश्वर तो कण-कण में हैं। लेकिन वह दिखाई नहीं देते हैं। उद्धारण के तौर पर पानी में नमक घोलते हैं तो दिखाई नहीं देता है। लेकिन चखने पर प्रतीत होता है। उसी प्रकार परमात्मा कण-कण में व्याप्त हैं। परमात्मा को तो केवल भक्ति से ही प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने नवरात्रि के समय में कन्याओं के पूजन व कन्याओं की रक्षा करने का संदेश देते हुए कहा कि सनातन धर्म में कन्याओं की पूजा की जाती है। इसलिए कन्याओं की रक्षा करने के साथ उन्हें शिक्षित करें जिससे समाज और देश प्रगति पर चले। कथा के दौरान श्रद्धालुओं को धार्मिक भजनों पर नृत्य करते व जयकारे लगाते हुए भी देखा गया। कथा का वाचन करते हुए पंडित जी ने कहा कि, भागवत कथा सुनना और भगवान को अपने मन में बसाने से व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन आता है। भगवान हमेशा आपने भक्त को पाना चाहता है। जितना भक्त भगवान के बिना अधूरा है उतना ही अधूरा भगवान भी भक्त के बिना है। भगवान ज्ञानी को नही अपितु भक्त को दर्शन देते हैं। और सच्चे मन से ही भगवान प्राप्त होता है। भगवान विष्णु की भक्ति में लीन रहते थे। उनके पिता हिरण्यकश्यप भगवान विष्णु को अपना शत्रु मानते थे। पुत्र को भगवान विष्णु की भक्ति करते देख उन्होंने उसे ही जान से मारने की ठान ली। प्रभु पर सच्ची निष्ठा और आस्था की वजह से हिरण्यकश्यप प्रह्लाद का कुछ भी अनिष्ट नहीं कर पाए। वामन अवतार के रूप में भगवान विष्णु ने राजा बलि को यह शिक्षा दी कि दंभ तथा अंहकार से जीवन में कुछ भी हासिल नहीं होता और यह भी बताया कि यह धनसंपदा क्षणभंगुर होती है। इसलिए इस जीवन में परोपकार करों। उन्होंने कहा कि अहंकार, गर्व, घृणा और ईर्ष्या से मुक्त होने पर ही मनुष्य को ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है। यदि हम संसार में पूरी तरह मोहग्रस्त और लिप्त रहते हुए सांसारिक जीवन जीते है तो हमारी सारी भक्ति एक दिखावा ही रह जाएगी। कथा के दौरान वामन अवतार की झांकी दिखाई गई और तेरे द्वार खड़ा भगवान भगत भर दे रे झोली पर श्रद्धालु भाव विभोर हो उठे। कथा सुनने के लिए बड़ी संख्या में महिला- पुरूष पहुंचे। यह आयोजन स्व श्री बेनीराम वर्मा की स्मृति वर्मा परिवार बोरिद द्वारा कराया जा रहा है। इस अवसर पर राजेश वर्मा, चंद्रकात वर्मा, मोनू वर्मा, सूर्यकांत, शशिकांत, द्रोपदी वर्मा, शैलंद्री वर्मा, जितेंद्र वर्मा, नीलम वर्मा सहित ग्रामीण उपस्थित थे।

सार समाचार

रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय में हुवा मतदाता जागरूकता के लिए कार्यक्रम

रायपुर(समय दर्शन)। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के मतदाता जागरूकता अभियान के निमित्त श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय में मतदाता जागरूकता सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमे कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस. के. सिंह कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में रहे फार्मेसी काउंसिल के पूर्व अध्यक्ष श्री जगदीश पटेल जी व विशिष्ट अतिथि अभाविप के महानगर मंत्री श्री प्रथम फुटाने रहे श्री जगदीश पटेल ने छात्रों का मार्गदर्शन करते हुए बताया की कैसे भारत हजारों सालों तक विदेशी आक्रांताओं का गुलाम रहा इसके पहले भारत सभी चीजों में पूरी दुनिया में सर्वश्रेष्ठ था चाहे वह भारत इकोनामी हो या भारत की शिक्षा व्यवस्था चाहे वह भारत की व्यापार हो या न्याय व्यवस्था साथ हि जगदीश पटेल जी ने विद्यार्थियों को समझाया की कैसे आपके सही मतदान से भारत फिर से 2047 तक विश्व गुरु बन सकता है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रथम ने कहा कि भारत में पढ़ा लिखा वर्ग सबसे कम मतदान करने जाता है एक रिपोर्ट के माने तो केरला जो की भारत का सबसे शिक्षित प्रदेश है उसके 60ब आबादी कभी अलग-अलग राजनीतिक पार्टी द्वारा निकल गए मेनिफेस्टो को पढ़ते ही नहीं प्रथम ने कहा की मतदाता ही देश का भाग्य विधाता है और मतदान का दिन केवल अवकाश का दिन नहीं बल्कि हमारे देश के प्रति एक ज़िम्मेदारी निभाने का दिन होता है। कार्यक्रम का समापन करते कुलसचिव डॉ. सौरब शर्मा ने देश के प्रगति पर विद्यार्थियों की भूमिका क्या है बताया और सभी को वोट डालने की शपत भी दिलाई। कार्यक्रम मे मुख्या रूप से विश्वविद्यालय इकाई के अध्यक्ष श्री रामजी शिवहरे ,पंकज साहू समेत विश्वविद्यालय इकाई के सभि कार्यकर्ता बंधु शामिल रहे।

अनिल टुटेजा की रिमांड बढ़ी

रायपुर(समय दर्शन)। शराब घोटाला मामले में पूर्व आईएएस अनिल टुटेजा की रिमांड 6 दिन के लिए और बढ़ा दी गई है। अब 4 मई को ईडी टुटेजा को फिर कोर्ट में पेश करेगी। बता दें कि रिमांड खत्म होने पर ईडी ने टुटेजा को सोमवार को फिर से विशेष कोर्ट में पेश किया। जहां ईडी ने अनिल टुटेजा को फिश्र से छह दिनों की रिमांड मांगी। इस पर टुटेजा के वकील ने मांग को अनावश्यक बताया। बचाव पक्ष के वकील ने कहा कि शराब स्कैम से संबंधित कुछ भी पूछताछ नहीं हुई। दिनभर में एकात घंटे ही पूछताछ हुई है। दोनों पक्षों को सुनने के लिए न्यायालय ने टुटेजा को 6 दिन के लिए फिर से ईडी को सौंप दिया है।

बुजुर्गों, दिव्यांगजनों में दिखा उत्साह, निर्वाचन आयोग को दिया धन्यवाद

होम वोटिंग के पहले दिन घर जाकर मतदान दल ने कराई वोटिंग

रायपुर लोकसभा में 622 मतदाता करेंगे होम वोटिंग

रायपुर(समय दर्शन)। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह के मार्गदर्शन में आज होम वोटिंग की शुरूआत हुई, जो कि 01 मई तक चलेगी। सुबह कलेक्टर ने मतदाताओं दल को गुलाब फूल देकर शुभकामनाओं सहित रवाना किया। निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिले में 85 प्लस वरिष्ठ नागरिक एवं दिव्यांग मतदाता को चिन्हित किया गया है। जिनकी संख्या 622 है। इसमें बलौदाबाजार में 63, भाटापारा में 50, धरसींवा में 66, रायपुर ग्रामीण में 85, रायपुर नगर पश्चिम में 56, रायपुर नगर उत्तर में 45, रायपुर नगर दक्षिण में 67, आरंग में 60 और अभनपुर में 130 शामिल है। होम वोटिंग के पहले दिन वृद्धजनों और दिव्यांगजनों मतदान के प्रति उत्साह दिखा। धरसींवा विधानसभा की 88 वर्षीय श्रीमती गोदावरी बाई शर्मा जिनका

मतदान केन्द्र क्रमांक 169, टेकारी के घर जाकर होम वोटिंग कराई गई। श्रीमती शर्मा ने इस कार्य के लिए निर्वाचन आयोग को धन्यवाद दिया। इसी प्रकार विधानसभा क्षेत्र बलौदाबाजार के मतदान केन्द्र टेकारी, तिल्दा के मतदाता श्री सहस राम ने 96 वर्ष के उम्र में अपना मत दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें मतदान करने की इच्छा थी, मगर इस उम्र में मतदान केन्द्र तक पहुंच पाना संभव नहीं था। आज जिला प्रशासन के कर्मचारियों ने घर आकर मुझसे मतदान कराया। मुझे इस बात की बहुत खुशी है। सिविल लाईन निवासी डॉ. आशीष मल्होत्रा जिनके पिता श्री कृष्ण कुमार मल्होत्रा, उम्र 97 वर्ष, माता श्रीमती सुलक्षणा मल्होत्रा जिनकी उम्र 95 वर्ष है। इनके यहां आज मतदान दल पहुंचा और औपचारिकता पूर्ण करने के बाद मतदान कराया। मल्होत्रा परिवार ने कहा कि निर्वाचन आयोग के इस पहल से हमें लोकतंत्र के इस पर्व में सहभागी होने का अवसर मिला।

इनोवा वाहन चोरी करने वाला नाबालिग गिरफ्तार

रायपुर(समय दर्शन)। राजधानी के सिविल लाईन थाना पुलिस ने थानाक्षेत्र राजातालाब से इनोवा वाहन चोरी होने के मामले में एक नाबालिग चोर को गिरफ्तार कर लिया है तथा उसके पास से चोरी का वाहन बरामद किया है। बता दें कि चोरी नकबजनी के प्रकरणों को संज्ञान में लेते हुये वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक संतोष सिंह द्वारा जिले के सभी पुलिस अधिकारी एवं थाना प्रभारी को चोरी नकबजनी की घटनाओं पर अंकुश लगाने एवं आरोपियों को पकड़ने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये है। जिस पर समस्त पुलिस राजपत्रित अधिकारियों एवं थाना प्रभारियों द्वारा मुखबीर लगाकर पेट्रोलिंग व सूचना संकलन कर इस संबंध में सूचना एकत्रित करने के साथ ही समस्त थाना प्रभारियों द्वारा अपने.अपने थाना क्षेत्र में चोरी, नकबजनी करने वाले चोरों के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही करने निर्देशित किया गया है। इसी तारतम्य में दीपेश साव ने थाना सिविल लाईन में रिपोर्ट दर्ज कराया कि इसका ट्रेवल्स का काम है। इनोवा क्रिस्टा वाहन क्रमांक सीजी 07 बीसी 6407 को इसका ड्रायवर संतोष कुमार बंछोर उर्फ राकेश चलाता है। जो वाहन को चलाने के बाद अपने घर राजातालाब गांधी मैदान के सामने खड़ी करता है। घटना दिनांक 27 अप्रेल को भी रात्रि करीबन 10.30 बजे उक्त वाहन को ड्रायवर संतोष कुमार अपने घर के सामने खड़ी किया था, अगले दिन दिनांक 28 अप्रेल को सुबह 06.30 बजे बाहर आकर देखा तो इनोवा क्रिस्टा वाहन जहां खड़ी किया था वहां पर नही था। किसी अज्ञात चोर के द्वारा ड्रायवर के घर के सामने राजातालाब से इनोवा क्रिस्टा वाहन कीमती करीबन 10 लाख रूपये को चोरी कर ले गया। प्रार्थी के रिपोर्ट पर थाना सिविल लाईन में अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया।

महतारी वंदन में 75 प्रतिशत महिलाओं को दूसरी किश्त नहीं मिली वोट लेने मुख्यमंत्री तीसरी किश्त की घोषणा कर रहे-कांग्रेस

सरकार बतायें कितनी और किन महिलाओं के खाते में पैसा डाला गया

केंद्र में सरकार बनने पर कांग्रेस देगी महिलाओं को 8333 रू. महिना

रायपुर(समय दर्शन)। महतारी वंदन में 75 प्रतिशत महिलाओं को दूसरी किश्त की राशि अभी तक नहीं मिली है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि वोट लेने के लिये मुख्यमंत्री तीसरी किश्त की राशि के संबंध बयान दे रहे है। कांग्रेस ने मांग किया है कि सरकार बतायें महतारी वंदन योजना की दूसरी किश्त कितने महिलाओं के खाते में डाला गया। जिन महिलाओं को पहली किश्त मिली थी उनमें से अधिकांश महिलाओं को अभी तक दूसरी किश्त नहीं मिली है। भाजपा सरकार पहली किश्त देने के बाद महिलाओं को दूसरी किश्त नहीं दे रही है। सरकार तीसरी किश्त देने का केवल बयानबाजी कर रही है। कांग्रेस पार्टी मांग करती है कि सरकार जिन महिलाओं के खाते में दूसरी किश्त डाली गयी है उनका नाम सार्वजनिक करें। भाजपा की नीयत में खोट आ गया है, जब लोकसभा चुनाव के पहले महिलाओं के खाते में पैसा नहीं आ रहा तब लोकसभा चुनाव के बाद महतारी वंदन योजना बंद हो जायेगी इसकी गारंटी है। विष्णुदेव साय की सरकार ने साबित किया है कि झूठ, लफ्फ़ाज़ी और वादाखिलाफी ही मोदी की गारंटी है। डबल इंजन की सरकार छत्तीसगढ़ का केवल शोषण कर रही है। महतारी वंदन के नाम पर प्रदेश के 1 करोड़ 4 लाख महिला मतदाताओं में से अधिसंख्यक महिलाओं का इंतजार अब तक खत्म नही हुआ है। 18 से 21 वर्ष की विवाहित महिलायें पूरी तरह से ठगी गई, यही नहीं जिन्हे पात्र बताया उनका पैसा भी खातों में अब तक नही आये। ऐसे हितग्राहियों की बड़ी संख्या है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि विधानसभा चुनाव के दौरान भाजपा ने सरकार बनते ही महिलाओं के खाता में 1 हजार रु. महीना ट्रांसफर करने का वादा किया था, दिसंबर माह में साय सरकार का गठन हो गया है और अभी जनवरी-फरवरी, मार्च और अप्रैल 4 माह हो चुका है और मात्र एक महीने की 1000 रु. राशि महिलाओं को दी गई है. यह महिलाओं के साथ धोखा और छल हैं. प्रदेश के 70 प्रतिशत महिलाओं को महतारी वंदन योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है। साय सरकार महतारी वंदन योजना में छल कपट खेल बंद करे, उनका उपहास न उड़ाये बल्कि सीधा 4 महीने की बकाया 4000 रु. की राशि खाता में जमा कराये।

मतदान के लिए प्रेरित करने बाल गोपाल हॉस्पिटल दे रहा है विशेष छूट

वोटर्स व मतदान कर्मियों के लिए शुद्ध पेयजल, नींबू पानी, ओआरएस भी देगा अस्पताल

नर्सिंग स्टाफ भी देंगे अपनी निःशुल्क सेवा

रायपुर(समय दर्शन)। रायपुर के प्रतिष्ठित शिशु चिकित्सालय बाल गोपाल हॉस्पिटल रायपुर के मतदाताओं को प्रेरित करने परामर्श शुल्क व जांच में छूट की घोषणा की है। यह छूट मतदान तिथि 07 मई से 12 मई तक मतदाताओं को प्राप्त होगी। इसके लिए उन्हें अंगुली का निशान दिखाना होगा। हॉस्पिटल के फाउंडर डॉ. अशोक भट्टर ने इस आशय की घोषणा करते हुए रायपुर कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव कुमार सिंह से मुलाकात कर इस संबंध में अवगत कराया है। रायपुर के मतदाताओं को मताधिकार का प्रयोग हेतु प्रेरित करने नगर के कई बड़े अस्पताल, होटल सहित चेम्बर ऑफ कॉमर्स से जुड़े व्यापारिक समूह लगातार अपनी सेवा शुल्क में छूट की घोषणा कर रहे हैं। इसी क्रम में आज बाल गोपाल हॉस्पिटल ने भी मतदान तिथि 07 से लेकर 12 मई तक मतदाता के बच्चों के हेल्थ चेकअप व ओपीडी परामर्श पर 30 प्रतिशत व टेस्टिंग में 10ब छूट दिए जाने की घोषणा की है। हॉस्पिटल के फाउंडर डॉ. भट्टर ने कहा कि प्रत्येक मतदाता का मतदान देश की उन्नति के लिए आवश्यक है, ऐसे में उन्होंने मतदाताओं को प्रेरित करने इस छूट की घोषणा की है। डॉ. भट्टर ने आगे बताया कि मतदान दिवस 07 मई को ग्रीष्म ऋतु में मतदान के लिए आने वाले वोटर्स और वहां नियुक्त मतदान कर्मियों व पुलिस बल को डिहाइड्रेशन से बचाने के लिए बाल गोपाल अस्पताल द्वारा ओआरएस, शुद्ध ठंडा पेयजल, नींबू पानी आदि की व्यवस्था भी की जाएगी। इसके अलावा अस्पताल का नर्सिंग स्टाफ भी सहायता के लिए कटोरा तालाब क्षेत्र के बूथ पर उपस्थित रहेगा।

मिनरवा वेंचर्स फंड ने केबीसी ग्लोबल लिमिटेड में हिस्सेदारी खरीदी

नासिक - अमेरिका स्थित मिनरवा वेंचर्स फंड ने केबीसी ग्लोबल लिमिटेड (जिसे पहले कार्डा कन्स्ट्रक्शन लिमिटेड के नाम से जाना जाता था) (बीएसई – 541161) में हिस्सेदारी खरीदी है, जो कन्स्ट्रक्शन और रियल एस्टेट विकास क्षेत्र में एक प्रमुख कंपनी है। 26 अप्रैल 2024 को नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर उपलब्ध बल्क डील के आंकड़ों के अनुसार, मिनरवा वेंचर्स फंड ने केबीसी ग्लोबल लिमिटेड की 1ब इक्विटी (1 करोड़ शेयर) प्रति शेयर रु. 2.05 पर खरीदी है। कंपनी ने घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में विस्तार के लिए रणनीतिक योजनाओं की भी घोषणा की है। गुड़ी पड़वा के अवसर पर कंपनी ने महाराष्ट्र के नासिक में कर्मयोगी नगर स्थित एक रेसिडेन्शियल कम कमर्शियल प्रोजेक्ट, हरि कुंज मेफ्लावर (MAHARERA Reg no : P51600020249) प्रोजेक्ट की 54 यूनिट्स का कब्जा सफलतापूर्वक सौंप दिया है। अप्रैल 2024 के महीने में, बॉर्ड ओफ डिरेक्टर्स ने एफ्सीसीबी के इश्यू के नियमों और शर्तों के अनुसार कुल 60 बॉन्डस को इक्विटी शेयरों में बदलने पर विचार किया और मंजूरी दे दी है। 2007 में स्थापित, कंपनी ने रियल एस्टेट उद्योग में महत्वपूर्ण प्रगति की है, जो नासिक, भारत में आवासीय परियोजनाओं के विकास और बिक्री में विशेषज्ञता रखती है। कंपनी मुख्य रूप से दो खंडों में, आवासीय और वाणिज्यिक परियोजनाओं का निर्माण और विकास और संविदात्मक परियोजनाएं काम करती है। कंपनी की उल्लेखनीय परियोजनाओं में हरि गोकुलधाम, हरि नक्षत्र-द्वितीय ईस्टेक्स्ट टाउनशिप, हरि संस्कृति द्वितीय, हरि सिद्धि और हरि समर्थ आदि शामिल हैं।

नई दिल्ली में लोकसभा चुनाव के लिए अपना नामांकन भरने से पहले एक रोड शो के दौरान उत्तर पश्चिम दिल्ली भाजपा के लोकसभा उम्मीदवार योगेन्द्र चंदोलिया, दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा और अन्य नेता.

कल्याण ज्वैलर्स ने अंबिकापुर में एकदम नए शोरूम के साथ छत्तीसगढ़ में अपनी मौजूदगी का किया और विस्तार

अंबिकापुर : भारत की सबसे भरोसेमंद और सबसे बड़ी आभूषण कंपनियों में से एक, कल्याण ज्वैलर्स ने आज अंबिकापुर में अपना नया शोरूम लॉन्च किया। इस नए और शानदार शोरूम के साथ छत्तीसगढ़ में कंपनी की मौजूदगी और मजबूत हो गई है। अंबिकापुर में एकदम नए शोरूम में कल्याण ज्वैलर्स के विभिन्न संग्रहों से डिजाइनों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। यह छत्तीसगढ़ राज्य में कंपनी का 5वां शोरूम है। ग्राहक विश्व स्तरीय माहौल के साथ अत्याधुनिक सुविधाओं की उम्मीद कर सकते हैं। इस तरह उन्हें खरीदारी का एक शानदार अनुभव मिलेगा। नए शोरूम के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए कल्याण ज्वैलर्स के कार्यकारी निदेशक श्री रमेश कल्याणरमन ने कहा, एक कंपनी के रूप में, हमने बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं। साथ ही हमने ग्राहकों के खरीदारी अनुभव को बेहतर बनाने के लिए एक विशेष सिस्टम कायम करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। हमारी इस विकास यात्रा के अगले चरण में, हमें अंबिकापुर में अपने नए शोरूम के लॉन्च की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है। इस लॉन्च के साथ, हमारा लक्ष्य छत्तीसगढ़ राज्य में अपनी मौजूदगी का लगातार विस्तार करना है। साथ ही हम कंपनी के विश्वास और पारदर्शिता के मूल मूल्यों के प्रति सच्चे रहते हुए अपने ग्राहकों को अपनी श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ खरीदारी की पेशकश जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं। लॉन्च का जश्न मनाते हुए, कल्याण ज्वैलर्स ने अनेक दिलचस्प और उपयोगी ऑफर्स की भी घोषणा की है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि ग्राहकों को नए शोरूम से उनकी आभूषण खरीद पर अधिकतम लाभ मिले।

एशियन पेंट्स ने विराट कोहली को क्रांतिकारी पेशकश - नियो भारत लेटेक्स पेंट के लिए ब्रांड एंबेसडर बनाया है

जबलपुर। एशियन पेंट्स, भारत की सबसे आगे रहने वाली पेंट और डेकोर कंपनी, क्रिकेट आइकन, विराट कोहली को अपने आने वाले नए लॉन्च - नियो भारत लेटेक्स पेंट के ब्रांड एंबेसडर के रूप में शामिल करने की घोषणा गर्व से करती है। नियो भारत लेटेक्स पेंट के साथ, एशियन पेंट्स इस डायनामिक उद्योग में अपनी मौजूदगी का विस्तार करके और इसे सभी के लिए ज्यादा सुलभ बनाकर पेंट की श्रेणी में क्रांति लाएगा। नियो भारत लेटेक्स पेंट हर तरह से क्रांतिकारी है क्योंकि इसमें विशेष पॉलिमर तकनीक है जो बेहतर फिनिश, ज़्यादा कवरेज और क्लीनेबिलिटीदेती है। ये प्रगति के रंग, जो कि नियो भारत की टैग लाइन है, उन लाखों भारतीयों को समर्पित है जो बेहतर जीवन की तलाश में हैं, और एशियन पेंट्स का लक्ष्य उनकी यात्रा में उनके साथ कदम से कदम मिला कर चलना है। बाजार में सबसे आगे रहते हुए, एशियन पेंट्स ने लगातार ऐसे नए-नए उत्पाद पेश किए हैं जो बेहतरीन होने को फिर से परिभाषित करते हैं, और नियो भारत लेटेक्स पेंट एक बार फिर इस श्रेणी में क्रांति लाने के लिए तैयार है। विराट कोहली से बेहतर कौन इस स्तर के लॉन्च के साथ न्याय कर सकता है। विराट ब्रांड के मूल्यों और भावना का प्रतीक हैं और यह एशियन पेंट्स के नेतृत्व और उच्च स्तर और प्रदर्शन के लिए समर्पण को दिखाता है, यह उन्हें एशियन पेंट्स और नए ढंग से बने नियो भारत लेटेक्स पेंट दोनों के लिए एक एकदम सही चेहरा बनाता है।

हार सामने देख बौखलाई कांग्रेस ओछे हथकण्डों का सहारा ले रही: भाजपा

भाजपा नेताओं ने केंद्रीय गृह मंत्री शाह का कूटरचित वीडियो वायरल करने पर कांग्रेस पर जमकर हमला बोला

रायपुर(समय दर्शन)। धर्मगुरु बालदास साहेब, भाजपा सांसद सुनील सोनी और विधायक मोतीलाल साहू ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के वीडियो से छेड़छाड़ कर आरक्षण खत्म करने का एक कूटरचित वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल करने के लिए कांग्रेस पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि कांग्रेस अपनी हार सामने देखकर बौखला गई है और जनता को भ्रमित करने के लिए सफेद झूठ और ओछे हथकण्डों का सहारा ले रही है। भारतीय जनता पार्टी और देश व प्रदेश की जनता-जनार्दन कांग्रेस की ऐसी हरकतें बिल्कुल सहन नहीं करने वाली है और जनता इसका करारा जवाब देने तैयार है। उल्लेखनीय है कि धर्मगुरु बालदास साहेब, भाजपा सांसद सोनी, विधायक साहू व भाजपा प्रदेश मीडिया प्रभारी अमित चिमनानी ने सोमवार को ही मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी को एक ज्ञापन सौंपकर यह मांग की कि इस मामले में गंभीरता से संज्ञान लिया जाए। तेलंगाना कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्यों, तेलंगाना कांग्रेस के उत्तरदायी नेताओं, उसके आधिकारिक सोशल मीडिया प्लेटफोर्म %एक्स% के संचालकों, इस फर्जी वीडियो को प्रसारित करने वाले कांग्रेस कार्यकर्ताओं, उपरोक्त वीडियो डिलीट करने वाले व्यक्ति तथा अन्य सभी संलिप्त दोषी व्यक्तियों के विरुद्ध आपराधिक प्रकरण (एफआईआर) दर्ज कर कड़ी-से-कड़ी कार्रवाई की जाए। भाजपा नेताओं ने कहा कि यह कूट-रचित वीडियो फेस-बुक, व्हाट्स एप तथा अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स द्वारा अब वायरल हो चुका है तथा इससे संबंधित खबर प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा वेब-पोर्टलों के माध्यम से प्रसारित हो रही हैं। कांग्रेस द्वारा योजना बनाकर षड्यंत्रपूर्वक इस वीडियो को तेलंगाना से प्रसारित किया गया है ताकि यह पूरे देश में प्रसारित तो हो सके किन्तु तेलंगाना की राज्य सरकार का संरक्षण प्राप्त होने के कारण अपराधियों के विरुद्ध कोई कार्रवाई न हो सके। कांग्रेस पार्टी तथा उसके नेताओं का यह कायरतापूर्ण कृत्य भारतीय दंड संहिता तथा आई.टी. एक्ट की सुसंगत धाराओं के तहत दंडनीय अपराध की श्रेणी में आता है। भाजपा नेताओं ने ज्ञापन सौंपने से पूर्व सोमवार को एकात्म परिसर स्थित भाजपा कार्यालय में पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह का यह एडिट किया गया वीडियो तेलंगाना कांग्रेस विंग द्वारा अपने आधिकारिक सोशल मीडिया प्लेटफोर्म %एक्स% के माध्यम से प्रसारित किया गया है। इसमें उनके मूल भाषण में कूट-रचना कर यह दर्शाया गया है कि उनके द्वारा कहा जा रहा है कि, यदि उनकी सरकार बनी तो वह आरक्षण को समाप्त कर देंगे ड्ढ भाजपा नेताओं ने कहा कि जिस वीडियो में छेड़-छाड़ की गई है, उसका मूल रूप भी उपलब्ध है जिसमें शाह वास्तव में कह रहे हैं कि, भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी तो हम गैर-संवैधानिक मुस्लिम रिजर्वेशन को समाप्त कर देंगे। यह अधिकार तेलंगाना के एस.सी., एस.टी., ओ.बी.सी. का है, वो अधिकार उनको मिलेगा और मुस्लिम रिजर्वेशन को हम समाप्त कर देंगे। धर्म के आधार पर संविधान में आरक्षण की कोई व्यस्था नहीं है तथा केन्द्रीय गृह मंत्री शाह का यह भाषण इसी परिप्रेक्ष्य में था, किन्तु तेलंगाना कांग्रेस के द्वारा वास्तविक बयान में कूट-रचना कर उपरोक्त बयान के वास्तविक वक्तव्य को ही बदल दिया गया तथा कूट रचना कर वक्तव्य में आरक्षण के विषय में गलत बातें जोड़कर जनता के बीच अफवाह फैलाने की निंदनीय हरकत की गई है। उन्होंने कांग्रेस को यह स्पष्ट चेतावनी भी दी है कि आदिवासियों-पिछड़ों-दलितों के खिलाफ ऐसा भद्दा मजाक करने से कांग्रेस बाज आए। ऐसी हरकतें बिल्कुल सहन नहीं की जाएगी।

संपादकीय

चुनाव आयोग से फिर ठनी

उद्धव ठाकरे की चुनाव आयोग से फिर ठन गई है। उनके नेतृत्व वाले गुट को आवंटित चिह्न 'मशाल' की थीम सांग में 'भवानी' का उल्लेख हुआ है। आयोग इसे हिन्दू धर्म की देवी का पर्याय मानते हुए बदलने को कहा है। चुनाव में धार्मिक संज्ञाओं, प्रतीकों, नारों आदि के उल्लेखों की सिद्धांततः मनाही है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। अतः पार्टियों से अपेक्षा है कि वे किसी एक धर्म और उनके प्रतीकों के आधार पर प्रचार न करें। वोट न मांगें। इससे उस सर्वसाधारणता की भावनाओं की अवज्ञा हो जाती है, जिसका आदर संविधान का मूल अभिप्राय है। उद्धव ठाकरे कहते हैं कि 'भवानी' नाम महाराष्ट्र, जिसमें इसके सभी धर्मो-विासों के नागरिक रहते आए हैं, वह छत्रपति शिवाजी के बलिदानों की पावन कर्मभूमि है, जिन्होंने 'भवानी' का नाम लिया है। शिवाजी माने महाराष्ट्र। इन्हीं शिवाजी के नाम पर उनके पिता बालासाहेब ठाकरे ने शिवसेना, जो पिछले साल बंट गई थी, की बुनियाद रखी थी। वे इस शब्द को नहीं बदलेंगे। उद्धव का यह रवैया आयोग से रार मोल लेने जैसा लगता है। इसलिए भी कि आयोग और न्यायालय ने बाला साहेब के मताधिकार को छह साल तक के लिए निलंबित कर दिया था। तब उन्होंने चुनावी भाषण में हिन्दू वर्चस्व के आधार पर भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने की वकालत की थी। पर उद्धव का मामला इससे भिन्न है। उन्हें आयोग से शिकायत है कि वह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कर्नाटक विधानसभा चुनाव एवं गृहमंत्री अमित शाह के मध्य प्रदेश चुनाव में क्रमशः बजरंगबली के नाम पर बटन दबाने एवं चुनाव बाद राम मंदिर के मुफ्त दर्शन के उल्लेखों पर आंखें मूंद लेता है। इस बाबत लिखे गए उनके शिकायती पत्र का जवाब तक नहीं देता है। क्यों? इसका जवाब दिए बगैर उद्धव के विरु द्ध कोई कार्रवाई क्या मुनासिब होगी? आयोग समथरे को दोषी नहीं मानता है तो वह समदर्शी कैसे हो सकता है? फिर चुनाव दर चुनाव में लग रहे 'जय.राम' के नारे को क्या कहा जाएगा? दरअसल, 'मशाल' गीत के बोल और उसका संदेश शिकायत की एक बड़ी वजह है। इसमें 'तानाशाही' को खत्म करने की बात कही जा रही है। उम्मीद की जा रही है कि यह मूल शिवसेना की थीम सांग की तरह लोगों को उद्धव गुट की तरफ खींचेगा। जिन वगरे को यह गीत संबोधित है, उसके आधार की एकमात्र प्रवक्ता आज कोई और पार्टी हो गई है। नोटिस का यह भी एक कारण है- उद्धव को लगता है। इनके बावजूद उन्हें नोटिस का तर्कपूर्ण उत्तर देना चाहिए। आयोग को भी इस पर विचार करना चाहिए।

जंग अब विश्व में नहीं, हथियारों में लगे

ललित गर्ग

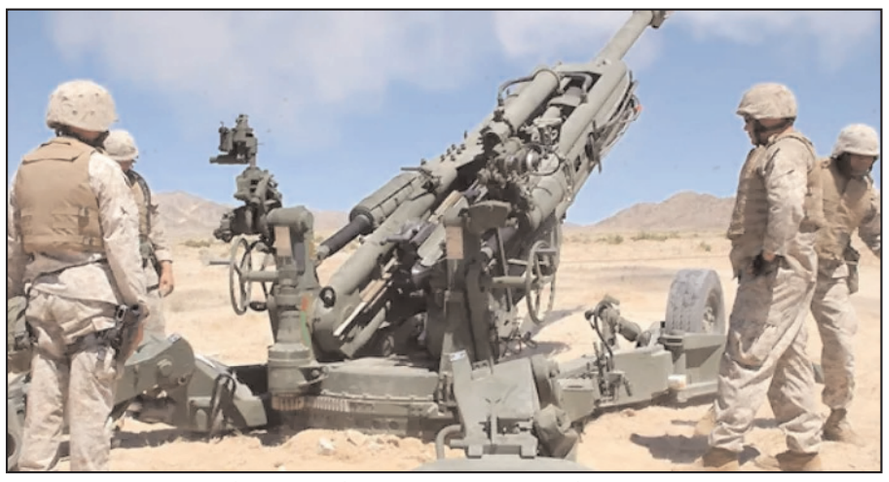

शांति के तमाम उपायों के बीच दुनियाभर में सैन्य खर्च, शस्त्रीकरण एवं घातक हथियारों की होड़ किसी खतरे की घंटी से कम नहीं। शस्त्रीकरण के भयावह दुष्परिणामाओं से समूचा विश्व भयाक्रांत है, हर पल आणविक हथियारों के प्र्रयोग को लेकर दुनिया डर के साये में जी रही है। इसीलिये आज अयुद्ध, निशस्त्रीकरण एवं शांति की आवाज चारों ओर से उठ रही है। शक्ति संतुलन के लिये शस्त्र-निर्माण एवं शस्त्र संग्रह की बात से किसी भी परिस्थिति में सहमत नहीं हुआ जा सकता। क्योंकि इससे अपव्यय हो होता ही है, साथ ही किसी भी गलत हाथों से दुरुपयोग होने की बहुत संभावनाएं रहती है। ताजा घटनाक्रम को देखें तो एक ओर रूस और यूक्रेन आमने-सामने हैं, वहीं दूसरी तरफ इजरायल और ईरान के बीच तल्खी भी चरम पर है। चीन और ताइवान के बीच भी रह-रह कर युद्ध के बदल मंडरा रहे हैं। ऐसे माहौल में यह सवाल भी गूंजना स्वाभाविक है कि क्या सचमुच दुनिया तीसरे विश्व युद्ध की ओर बढ़ते हुए घातक हथियारों के उपयोग की प्रयोगभूमि बन रही है? सवाल दूसरे ओर भी हैं। स्टॉकहोम इन्टरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट की हथियारों पर आयी ताजा रिपोर्ट ऐसे ही सवाल खड़े कर रही है। इसका संतोषजनक जवाब शायद ही मिले क्योंकि दुनिया सीधे-सीधे दो खेमों में बंट गई है।

स्टॉकहोम की रिपोर्ट के आंकड़े चौंकाने वाले ही नहीं, डराने वाले हैं। शांति के तमाम उपायों के बीच दुनियाभर में सैन्य खर्च का बढ़ना एवं नये-नये हथियारों का बाजार गरम होना, चिन्ताजनक है। रिपोर्ट में खास बात यह है कि दुनिया में स्र्वाधिक सैन्य खर्च करने वाले देशों में भारत चौथे नंबर पर बरकरार है। शांति एवं अहिंसा की भूमि पर हथियारों का जमावड़ा उसकी कथनी एवं करनी के भेद को उजागर कर रहा है। ये सवाल स्वाभाविक है कि जब प्रत्येक देश शाांति बनाए रखने की वकालत करता है फ्रि हथियारों की होड़ लगातार क्यों बढ़ रही है? भारत दुनिया का सबसे बड़ा हथियार ??आयातक देश बन चुका है। स्टॉकहोम की ओर से जारी रिपोर्ट में इसका खुलासा हुआ है। भारत ने बीते पांच साल में दुनिया में सबसे ज्यादा हथियार खरीदे हैं। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि यूरोप का हथियार आयात 2014-18 की तुलना में 2019-23 में लगभग दोगुना बढ़ा है, जिसके पीछे रूस-यूक्रेन युद्ध बड़ा कारण माना जा रहा है। वहीं, इसके अलावा पिछले पांच वर्षों में सबसे ज्यादा हथियार एशियाई देशों ने खरीदे हैं। इस लिस्ट में रूस-यूक्रेन का युद्ध देश के रक्षा निर्यात को काफी प्रभावित किया है। इस कारण से पहली बार रूस हथियार निर्यात में तीसरे स्थान पर पहुंच गया है। तो वहीं, अमेरिका पहले और फ्रांस दूसरे नंबर पर है।

पिछले 25 सालों में पहली बार, संयुक्त राज्य अमेरिका एशिया और ओशिनिया का सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता रहा। अमेरिका की हथियारों की होड़ एवं तकनीकीकरण की दौड़ पूरी मानव जाति को ऐसे कोने में धकेल रही है, जहां से लौटना मुश्किल हो गया है। अब तो दुनिया के साथ-साथ अमेरिका स्वयं ही इन हथियारों एवं हिंसक मानसिकता का शिकार है। अमेरिका दुनिया पर आधिपत्य स्थापित करने एवं अपने शस्त्र कारोबार को पनपाने के लिये जिस अपसंस्कृति को उसने दुनिया में फैलाया है, उससे पूरी मानवता कराह रही है, पीड़ित है। अमेरिका ने नई विश्व व्यवस्था (न्यू वर्ल्ड आर्डर) की बात की है, खुलेपन की बात की है लगता है 卐विश्वमानव卐 का दम घुट रहा है और घुटन से बाहर आना चाहता है। विडम्बना देखिये कि अमेरिका दुनिया का सबसे अधिक शक्तिशाली और सुरक्षित देश है लेकिन उसके नागरिक सबसे अधिक असुरक्षित और भयभीत नागरिक हैं। वहां की जेलों में आज जितने कैदी हैं, दुनिया के किसी भी देश में नहीं हैं। ऐसे कई वाकये हो चुके हैं कि किसी रेस्तरां, होटल या फ्रि जमावड़े पर अचानक किसी सिरफ्रि ने गोलीबारी शुरू कर दी और बड़ी तादाद में लोग मारे गए। 2014 में अमेरिका में हत्या के कुल दर्ज करीब सवा चौदह हजार मामलों में अड़सठ फीसद में बंदूकों का इस्तेमाल किया गया था।

एक तरफ अमरीका और उसके सहयोगी नाटो देश हैं तो दूसरी तरफ रूस-चीन का गठजोड़ है। तटस्थ रहने वाले देश भी गाहे-बगाहे अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी खेमे की तरफ झुकाव प्रदर्शित करते रहे हैं। ऐसे में आखिरी उम्मीद संयुक्त राष्ट्र ही रह जाता है। जबकि संयुक्त राष्ट्र की शक्तियां एवं उद्देश्य कोरे दिखावे के हैं, समूची दुनिया इससे वाकिफहै। वह ऐसे किसी भी संकट में शांति प्रस्ताव पारित कर अपनी जिम्मेदारियों से इतिश्री कर पला झाड़ लेता है। वह न तो रूस-यूक्रेन के संघर्ष में और न ही इजरायल-फ्लिस्तीन संघर्ष रोकने में कोई सार्थक भूमिका अदा कर पा रहा है। उसके कड़े से कड़े फैसले भी आखिर में महाशक्तियों के वीटो के सामने हथियार डाल देते हैं। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद अस्तित्व में आया संयुक्त राष्ट्र कहने को तो दुनिया के देशों का सबसे बड़ा मंच है पर युद्धों को रोकने में उसकी भूमिका नगण्य है। ऐसे में दुनिया में बढ़ते हथियारों की होड़ एवं युद्ध की संभावनाओं को आखिर कौन-कैसे-किसको रोके? जाहिर है, ऐसी परिस्थितियों में तो हथियारों की होड़ बढ़ेगी ही। अमरीका एक तरफ युद्ध की तरफ बढ़ रहे देशों से शांति की अपील करने में सबसे आगे रहता है। लेकिन दूसरी तरफ अमरीकी हथियार कंपनियां तमाम देशों को खरबों रुपए के हथियार बेच रहीं है। इन कंपनियों के लिए तो युद्धकाल ही स्वर्णकाल होता है। ऐसे दौर में जब अधिकांश देश शिक्षा, रोजगार व सेहत के मोर्चे पर संकटों का सामना कर रहे हैं, हथियारों की इस होड़ को रोका ही जाना चाहिए। रूस एवं यूक्रेन के बीच लम्बे समय से चल रहा युद्ध भीषणतम तबाही एवं सर्वनाश का कारण बनता दिख रहा है। रूस द्वारा परमाणु हथियारों के इस्तेमाल किये जाने एवं यूक्रेन के द्वारा 'डर्टी बम' का इस्तेमाल किये जाने की धमकियां, दुनिया के लिये डर का कारण बन रही है। भयंकर विनाश की आशंकाओं के बीच समूची दुनिया सहमी हुई है। यदि परमाणु हथियारों का उपयोग होता है तो यह मानवता के मूलभूत सिद्धांतों के खिलाफ होगा एवं दुनिया को अशांति की ओर अग्रसर करने वाला होगा। अब परमाणु हथियारों के इस्तेमाल का खतरा इसलिए बढ़ गया है कि यूक्रेन को इतने लंबे समय से झुकता न देख रूस का अहं चोट खा रहा है। हालांकि परमाणु हथियारों के दुष्परिणामों से दोनों देश अनजान नहीं हैं। इस युद्ध को चलते लंबा वक्त हो गया। इस तरह युद्धरत बने रहना खुद में एक असाधारण और अति-संवेदनशील मामला है, जो समूची दुनिया को विनाश एवं विध्वंस की ओर धकेलने जैसा है। ऐसे युद्ध का होना विजेता एवं विजित दोनों ही राष्ट्रों को सदियों तक पीछे धकेल देगा, इससे भौतिक हानि के अतिरिक्त मानवता के अपाहिज और विकलांग होने का भी बड़ा कारण बनेगा। यूक्रेन और रूस में शांति का उजाला करने, अभय का वातावरण, शुभ की कामना और मंगल का फैलाव करने के लिये भारत ने लगातार शांति प्रयास किये हैं। लेकिन प्रश्न है कि दुनिया को अहिंसा, अयुद्ध एवं शांति का सन्देश देने वाला भारत क्यों हथियारों की दोड़ में शामिल है? मनुष्य के भयभीत मन को युद्ध एवं हथियारों की विभीषिका से मुक्ति दिलाना आवश्यक है। युद्धरत देशों में शांति स्थापित कर, उन्हें अभय बनाकर, युद्ध-विराम करके विश्व को निर्भय बनाना चाहिए। निश्चय ही यह किसी एक देश या दूसरे देश की जीत नहीं बल्कि समूची मानव-जाति की जीत होगी। यथार्थ यह है कि अंधकार प्रकाश की ओर चलता है, पर अंधापन मृत्यु-विनाश की ओर। लेकिन रूस ने अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य का अहसास एक गलत समय पर गलत उद्देश्य के लिये कराया है। इस युद्ध से होने वाली तबाही रूस-यूक्रेन की नहीं, बल्कि समूची दुनिया की तबाही होगी, क्योंकि रूस परमाणु विस्फोट करने को विवश होगा, जो दुनिया की बड़ी चिन्ता का सबब है। बड़े शक्तिसम्पन्न राष्ट्रों को इस युद्ध को विराम देने के प्रयास करने चाहिए। लेकिन प्रश्न है कि जो देश हथियारों के निर्माता है, वे क्यों चाहेंगे कि युद्ध विराम हो।

चुनाव की फिरौती

हिमाचल में लोकसभा एवं छह उपचुनावों ने चंद चेहरों से फिरौती मांग ली है। सलवटें माथे पे आईं तो करवटें बदल गईं, महफिल को लूटने का मजा कुछ अजीब था। टिकटों के आबंटन में फंसी पार्टियों की उधेड़बुन अंततः विधायकों की जेब में सियासत तलाश रही है और इस बस्ती में शोर है- देखो-देखो वह शेर आ गया। शेर होते तो मंचों पर दहाड़ नहीं रहे होते, लेकिन बनते-बिगड़ते समीकरणों में दूरबीन खोज रही है। चुनाव को दूरबीन से देखने वाले नेताओं की बाढ़ में कुछ चेहरे पहचान में आ रहे हैं और कुछ सियासी घटनाक्रम में महान हो रहे हैं। मंडी में कंगना के स्वागत में कांग्रेस का अंगना पैरवी कर गया कि इस इलाके में उनका शेर विक्रमादित्य सिंह है। शेर ढूंढने निकली कांग्रेस के पास विधायकों के सिवाय और हो भी कौन सकता, वरना आठ-दस गैर विधायकों को मिले कैबिनेट रैंक चुनाव की जमीन पर खड़े होते। यहां तर्क-वितर्क में फंसी सियासत को अगर बागी विधायकों को भाजपा की उम्मीदवारी पर रंज है, तो कांग्रेस के वर्तमान विधायकों को लोकसभा चुनाव में उतारने का भी यही प्रपंच है। जाहिर है सत्तारूढ़ होकर पार्टियां अपने ही नेताओं का शिकार करते-करते ऐसी स्थिति में पहुंच गई हैं कि कहीं फिल्मी कलाकार को राजनीतिक पर्दे पर उतारा जा रहा है, तो कहीं अपनी ही सत्ता की परिक्रमा में मजा आ रहा है। चुनाव भारी है, इसलिए फिरौती में कांग्रेस के कुछ विधायक मांग लिए। चुनाव आभारी है, इसलिए भाजपा की फिरौती में कांग्रेस के बागी छह जगह उतार दिए, वरना पार्टी के पास संगठनात्मक ताकत तो सब पर भारी है। बहरहाल जिस सर्कस से होकर कांग्रेस के टिकट गुजर रहे हैं, वहां हल्का-हल्का मनोरंजन व पार्टी के दांतों पर एक ही तरह का मंजन भी हो रहा है। अब जबकि मैदान के दूसरे छोर पर विपक्ष की सेना तैनात है, कांग्रेस अपनी ताकत की पोथी से सर्वेक्षण निकालकर देख रही है कि किसे सेनापति बनाया जाए। पहले ही चुनावी फिरौती ने कांग्रेस की सत्ता से मंडी में उम्मीदवार छीन लिया और अब सर्वेक्षण के जरिए यह पुख्ता हो रहा है कि हमीरपुर से उप मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री और कांगड़ा संसदीय क्षेत्र से आरएस बाली जैसा कोई नहीं। यकीनन सर्वे इन दोनों नेताओं की कद काठी पर कांग्रेस के अरमान चढ़ाना चाहता है, लेकिन जिन्हें बिना चुनाव लड़े बड़े-बड़े पद व सरकार के ओहदे मिले, उनकी उपयोगिता अब आड़े आ रही है। सत्ता के पदों का आबंटन खुशफहमी दे सकता है, लेकिन किसी नेता का उदय जनता के अखाड़ों पर मिट्टी से सन कर ही होता है। हम मान सकते हैं कि वर्तमान सरकार में विक्रमादित्य सिंह, मुकेश अग्निहोत्री व आरएस बाली की हस्तियों में कांग्रेस की पतवार थामने का कौशल है। यह सिद्ध हो रहा है कि ये नेता अपने वजूद में पार्टी का हुजूम लेकर चल सकते हैं। दूसरी ओर बागियों के खेत में मूली ढूंढ कांग्रेस को उनके कद को नीचा करना टेढ़ी खीर बना हुआ है। मुख्यमंत्री के निशाने पर सुधीर शर्मा व राजेंद्र राणा का रहना, यह भी साबित करता है कि अगर ये दोनों चुनाव की फिरौती में साबित हो गए, तो हिमाचल की सियासी धुरी में इनका भी कमाल होगा। जाहिर तौर पर कांग्रेस को वीरभद्र सिंह के बाद ऐसे नेताओं की जरूरत थी जो प्रदेश को चलाने की अलावा पार्टी को सत्ता में बनाए रखने का करिश्मा पैदा कर सकें। कांग्रेस ने सुखविंदर सुक्खू को चुना, इसलिए वह तमाम नेताओं पर भारी पड़े, लेकिन अब उन्हें लोकसभा तथा उपचुनावों में अपनी हस्ती के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को चूमना होगा। परिणाम जो भी हों, हिमाचल दोनों प्रमुख दलों के बीच कुछ नेताओं के वजन को महसूस कर सकता है, वरना सत्ता के बीच गमलों में उगे नेता तो बहुत नज़र आते हैं।

मत का प्रयोग सोच समझ कर करें

विनीत नारायण

अभी आम चुनाव का प्रथम चरण ही पूरा हुआ है पर ऐसा नहीं लगता कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में चुनाव जैसी कोई महत्त्वपूर्ण घटना घट रही है। चारों ओर एक अजीब-सा सन्नाटा पसरा हुआ है।

न तो गांव, और न ही कस्बों और शहरों में राजनैतिक दलों के होर्डिंग्स और पोस्टर दिखाई दे रहे हैं, और न ही लाऊडस्पीकर पर वोट मांगने वालों का शोर सुनाई दे रहा है, चाय के ढाबों और पान की दुकानों पर अक्सर जमा होने वाली भीड़ भी खामोश है। जबकि पहले चुनावों में ये शहर के वो स्थान होते थे जहां से मतदाताओं की नब्ज पकड़ना आसान होता था। आज मतदाता खामोश है। इसका क्या कारण हो सकता है। संभव है कि मतदाता तय कर चुके हैं कि उन्हें किसे वोट देना है पर अपने मन की बात को जुबान पर नहीं लाना चाहते। क्योंकि उन्हें इसके संभावित दुष्परिणामों का खतरा नजर आता है। यह हमारे लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए अच्छा लक्षण नहीं है। जनसंवाद के कई लाभ होते हैं। एक तो जनता की बात नेता तक पहुंचती है और दूसरा ऐसे संवादों से जनता जागरूक भी होती है। अलबत्ता, शासन में जो दल बैठा होता है, वो कभी नहीं चाहता कि उसकी नीतियों पर खुली चर्चा हो। दरअसल, उसे इससे माहौल बिगड़ने का खतरा रहता है। हर शासक यही चाहता है कि उसकी उपलब्धियों को बढ़ा-चढ़ाकर मतदाता के सामने पेश किया जाए। इंदिरा गांधी से नरेन्द्र मोदी तक कोई भी इस मानसिकता का अपवाद नहीं रहा है। आम तौर पर यह माना जाता था कि मीडिया सचेतक की भूमिका निभाएगा। पर मीडिया को भी खरीदने और नियंत्रित करने पर हर राजनैतिक दल अपनी हैसियत से ज्यादा खर्च करता है जिससे उसका प्रचार होता रहे। पत्रकारिता में इस मानसिकता के जो अपवाद होते हैं वे यथासंभव निष्पक्ष रहने का प्रयास करते हैं ताकि परिस्थितियों और समस्याओं का सही मूल्यांकन हो सके। पर इनकी पहुंच बहुत सीमित होती है, जैसा आज हो रहा है। ऐसे में मतदाता तक सही सूचनाएं नहीं पहुंच पातीं। अधूरी जानकारी से जो निर्णय लिए जाते हैं, वो मतदाता, समाज और देश के हित में नहीं होते जिससे लोकतंत्र कमजोर होता है। सब मानते हैं कि किसी भी देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था ही सबसे अच्छी होती है क्योंकि इसमें समाज के हर वर्ग को अपनी सरकार चुनने का मौका मिलता है। इस शासन प्रणाली के अंतर्गत आमजन को अपनी इच्छा से चुनाव में खड़े हुए किसी भी प्रत्याशी को वोट देकर अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होता है। इस तरह चुने गए प्रतिनिधियों से विधायिका बनती है। एक अच्छा लोकतंत वह है, जिसमें राजनीतिक और सामाजिक न्याय के साथ-साथ आर्थिक न्याय की व्यवस्था भी है। देश में यह शासन प्रणाली लोगों को सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान करती हैं। आज भारत में जो परिस्थिति है, उसमें जनता भ्रमित है। उसे अपनी बुनियादी समस्याओं की चिंता है पर उसके एक हिस्से के दिमाग में भाजपा और संघ के कार्यकर्ताओं ने यह बैठा दिया है कि नरेन्द्र मोदी अब तक के सबसे श्रेष्ठ और ईमानदार प्रधानमंत्री हैं, इसलिए वे तीसरी बार फिर जीतकर आएंगे, जबकि जमीनी हकीकत अभी अस्पष्ट है। क्षेत्रीय दलों के नेता काफी तेजी से अपने इलाके के मतदाताओं पर पकड़ बना रहे हैं। और उन सवालों को उठा रहे हैं, जिनसे देश का किसान, मजदूर और नौजवान चिंतित है। इसलिए उनके प्रति आम जनता की अपेक्षाएं बढ़ी हैं, इसलिए 'इंडिया' गठबंधन के नेताओं की रैलियों में भरी भीड़ आ रही है। जबकि भाजपा की रैलियों का रंग फीका है। हालांकि चुनाव की हवा मतदान के 24 घंटे पहले भी पलट जाती है। इसलिए पहले से कुछ कहा नहीं जा सकता। 1970 के दशक में हुए जयप्रकाश आंदोलन के बाद से किसी भी राजनैतिक दल ने आम मतदाताओं को लोकतंत्र के इस महापर्व के लिए प्रशिक्षित नहीं किया है जबकि अगर ऐसा किया होता तो इन दलों को चुनाव के पहले मतदाताओं को खैरात बांटने और उनके सामने लंबे-चौड़े झूठे वादे करने की नौबत नहीं आती। हर दल का अपना एक समर्पित काडर होता जबकि आज काडर के नाम पर पैसा देकर कार्यकर्ता जुटाए जाते हैं, या वे लोग सक्रिय होते हैं, जिन्हें सत्ता मिलने के बाद सत्ता की दलाली करने के अवसरों की तलाश होती है। ऐसे किराये के कार्यकर्ताओं और विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता का अभाव ही दल बदल का मुख्य कारण है। इससे राजनेताओं की और उनके दलों की साख तेजी से गिरी है। एक दृष्टि से इसे लोकतंत्र के पतन का प्रमाण माना जा सकता है। हालांकि दूसरी ओर, यह मानने वालों की भी कमी नहीं है कि इन सब आंधियों को झेलने के बावजूद भारत का लोकतंत्र मजबूत हुआ है। उसके करोड़ों आम मतदाताओं ने बार-बार राजनैतिक परिपक्वता का परिचय दिया है, जब उन्होंने बिना शोर मचाए अपने मत के जोर पर कई बार सत्ता परिवर्तन किए हैं। मतदाता की राजनैतिक परिपक्वता का एक और प्रमाण यह भी है कि अब निर्दलीय उम्मीदवारों का प्रभाव लगभग समाप्त हो चला है। 1951 के आम चुनावों में 6त्न निर्दलीय उम्मीदवार जीते थे जबकि 2019 के चुनाव में इनकी संख्या घटकर मात्र 0.11त्न रह गई। स्पष्ट है कि मतदाता ऐसे उम्मीदवारों के हाथ मजबूत नहीं करना चाहता जो अल्पमत की सरकारों से मोटी रकम ऐंठ कर समर्थन देते हैं।

शिवराज की जीत का कीर्तिमान बनाएंगी लाडली बहनें

प्रमोद भार्गव

मध्य प्रदेश लोकसभा चुनाव में पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को लाडली बहनाओं का साथ मिल गया तो, वे मध्य प्रदेश में सबसे ज्यादा मतों से जीतने वाले प्रत्याशी हो सकते हैं? वैसे भी मतदान में इस आधी आबादी की लगभग बराबर की हिस्सेदारी है। प्रदेश में 2,73,87,122 महिला मतदाता हैं, जो कुल मतदाताओं की 47.75 फीसदी हैं। इनमें से एक करोड़ 29 लाख से अधिक लाडली बहनाओं को 1250 रुपए प्रतिमाह मिल रहे हैं। उज्जवला योजना की 80 लाख और पात्र लाडली बहनों को 450 रुपए में रसोई गैस सिलेंडर मिल रहा है। महिलाओं को सरकारी नौकरियों में 35 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान मुख्यमंत्री शिवराज के कार्यकाल में ही हुआ है। महिला स्व-सहायता समूह की 62 लाख सदस्यों में से 15 लाख लखपति दीदी हैं। विषेश पिछड़ी जनजाति बैगा, भारिया और सहरिया जनजाति की 2 लाख 33 हजार महिलाओं को पोषाहार भत्ता का प्रावधान शिवराज के समय ही हुआ था। इसीलिए हम देख रहे हैं कि विदिशा संसदीय क्षेत्र से शिवराज के प्रत्याषी घोत होने के बाद शिवराज भैया को चुनाव लड़ने के लिए धन दे रही हैं। विदिशा को शिवराज का गढ़ माना जाता है। 19 साल बाद शिवराज इस सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। जनता ने उनसे भाई और मामा का रिश्ता बना हुआ है। भांजे-भांजी उनके लिए गुल्लक में पैसे इकट्ठे करके दे रहे हैं। एक मोची ने शिवराज को 10 रुपए का चंदा दिया। यहां धनराशि को छोटी या बड़ी राशि के रूप में देखने की बजाय उसे शिवराज की लोकप्रियता के रूप में देखने की जरूरत है। 2018 के विधानसभा चुनाव की तुलना में 2023 में 1.52 प्रतिशत मतदान अधिक हुआ था। इसे लाडली बहनों का करिश्मा बताया गया है। शहर से कहीं ज्यादा ग्रामीण मतदाता की मतदान के प्रति जागरूकता दिखी है। इसीलिए ग्रामों में महिलाओं की लंबी-लंबी कतारें देखने में आईं थीं। साफ है, जिस उत्साह से मतदाता घर से बाहर निकला उससे उसका लोकतंत्र के प्रति दायित्व बोध झलका ही, वराज के प्रति विश्वास भी नजर आया था। यही करिश्मा विदिशा लोकसभा सीट पर दिखाई देगा। इस बहुचर्चित विदिशा संसदीय क्षेत्र में 7 मई को मतदान होना है। यह सीट वैसे भी जनसंघ और भाजपा का गढ़ मानी जाती रही है। यहां से पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी से लेकर सुषमा स्वराज भी लोकसभा का चुनाव जीत चुकी हैं।

स्वयं वराज इस सीट से पांच बार चुनाव जीत चुके हैं। यहां से कांग्रेस ने प्रताप भानु शर्मा को उम्मीदवार बनाया है। शर्मा सातवीं और आठवीं लोकसभा में विदिशा से सांसद रह चुके हैं। वे कोई ज्यादा दमखम दिखा पाएंगे ऐसा लग नहीं रहा है। इसलिए शिवराज का पलड़ा ही भारी दिख रहा है।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चैहान की उदार कार्यशैली का परिणाम ही रहा था कि विधानसभा चुनाव में भाजपा को 166 सीटों पर बड़ी जीत मिली थी। शिवराज सिंह चैहान के नवाचार निरंतर देखने में आते रहे हैं। बालिकाओं की संख्या कम होना किसी भी विकासशील समाज के लिए बड़ी चुनौती थी। इस चुनौती से तभी निपटा जा सकता है, जब स्त्री की आर्थिक हैसियत तय हो और समाज में समानता की स्थितियां निर्मित हों ? इस नजरिए से मध्यप्रदेश में 'लाडली लक्ष्मी योजना' एक कारगर औजार साबित हुई और इसीलिए इसे देख के नवाचारी मॉडल के रूप में मान्यता मिली। दिल्ली, हरियाणा और पंजाब ने ही नहीं पूरे देश ने इस योजना का अनुसरण किया और बेटी बचाने के लिए जुट गए। क्योंकि बेटी बचेगी, तभी बेटे बचेंगे और सृष्टि की निरंतरता बनी रहेगी। जैविक तंत्र से जुड़े इस सिद्धांत को हमारे ऋषि -मुनियों ने भलि-भांति आज से हजारों साल पहले समझ लिया था, इसीलिए भगवान शिव-पार्वती के रूप में अर्धनारीश्वर के प्रतीक स्वरूप मंदिरों में मूर्तियां गढ़ी गईं, जिससे पुरुश संदेश लेता रहे कि नारी से ही पुरुष का अस्तित्व अक्षुण है। किंतु हमने शिव-पार्वती की पूजा तो की, परंतु उनके एकरूप में अंतर्निहित अर्धनारीश्वर के प्रतीक को आत्मसात नहीं किया। मुख्यमंत्री चैहान की करीब 18 साल के नेतृत्व की सार्वजनिक यात्रा का अवलोकन करें तो यह साफदेखने में आता है कि उनकी कार्य संस्कृति अन्य मुख्यमंत्रियों से भिन्न रही है। वे प्रकृति, कृषि व किसान प्रेमी हैं और युवाओं को कौशल दक्ष बनाने की प्रखर इच्छा रखते हैं। इसीलिए प्रदेश में अनेक प्रकार की छात्रवृत्तियां हैं, जिससे छात्र को आर्थिक बाधा का सामना न करना पड़े। गांव से यदि पाठशाला कुछ दूरी पर है तो बालिका को आने-जाने में व्यवधान न हो, इस हेतु साइकिल है। होनहार छात्रों को पढ़ाई में बाधा नहीं आए, इस नाते विद्यार्थियों को मोबाइल और लैपटॉप दिए। ये योजनाएं मुख्यमंत्री के अंतर्मन में आलोड़ित संवेदनशीलता को रेखांकित करती हैं। शिवराज कविता तो नहीं लिखते, लेकिन दूरांचल वनवासी-बहुल जिले झाबुआ में परंपरागत 'आदिवासी गुड़िया हस्तशिल्प' कला को संरक्षित करने और इसे आजीविका से जोड़ने का उपाय जरूर करते हैं। फलस्वरूप अब स्थानीय लोगों के नाजुक हाथों द्वारा निर्मित यह कपड़े की गुड़िया मध्य-प्रदेश सरकार के 'एक जिला, एक उत्पाद' योजना के अंतर्गत व्यापारिक उड़ान भरकर जर्मनी और आस्ट्रेलिया के बच्चों का खिलौना बन गई है। सामाजिक सरोकार से इस संरचना की महिमा वही नवाचारी समझ सकता है, जो कल्पनाशील होने के साथ अपने दायित्वों के प्रति उदार और जनता के प्रति संवेदनशील हो। शिवराज के ये नवाचारी काम ऐसे हैं, जो उनकी जीत की आश्वस्ति प्रदान करते हैं। तय है, विदिशा संसदीय क्षेत्र में महिलाओं का ध्रुवीकृत शिवराज के पक्ष में मतदान उनकी मप्र में सबसे बड़ी जीत का आधार बन सकता है।

घर में मकड़ी के जाले करते हैं जीवन का बड़ा नुकसान

मकड़ी का घर में होना अलग-अलग क्षेत्रों में शुभ और अशुभ दोनों माना जाता है। सामान्यतः वास्तु कहता है कि घर में मकड़ी जाले दरिद्रता के सूचक हैं, इन्हें तत्काल साफ करना चाहिए। मकड़ी एक जहरीला जीव है जिसका घर में होना बीमारियों की वजह बन सकता है। वास्तु अनुसार मकड़ी के जाले होने से घर में 5 तरह के दोष आते हैं।

5 तरह के दोष

- इससे घर की आर्थिक वृद्धि प्रभावित होती है।
- इससे घर के मुखिया की प्रगति रूक जाती है।
- इससे घर में प्रेम और रिश्तों में दूरी आ जाती है।
- इससे धार्मिक कार्यों का लाभ और पुण्य नहीं मिलता है। क्योंकि भगवान स्वच्छता में रहना पसंद करते हैं।
- घर में नकारात्मकता, अवसाद और निराशा आने लगती है। मकड़ी का जाला जीवन में उलझनों के बढ़ने का संकेत होता है।

मकड़ी के शुभ फल

- जिस पर मकड़ी गिर जाए उसे नए कपड़े मिलते हैं।
- मकड़ी मौसम का संदेश देती है।
- मकड़ी अकारण काटती या नुकसान नहीं पंहुचाती जब तक कि उसे छेड़ा न जाए अतः कुछ स्थानों पर इसे किसानों का साथी माना जाता है। यह चींटी खत्म कर देती है।
- अगर आप जाल बुनते हुए मकड़ी देखते हैं तो यह संकेत हैं कि आपको जल्दी कामयाबी मिलेगी। कार्यक्षेत्र में आपकी स्थिति बेहतर होगी प्रशंसा प्राप्त कर सकते हैं।
- मकड़ी अगर सपने में भी जाल बुनते दिखे तो यह भी शुभ फलदायक होता है।
- ऊपर चढ़ती मकड़ी तरक्की का संदेश देती है।

जल की महिमा से आपूरित हैं हमारे व्रत त्योहार

भारतीय परंपरा में कोई भी ऐसा धार्मिक कार्य नहीं होगा जिसमें जल कलश स्थापित न किया जाता हो। इसी से जल की महत्ता सिद्ध होती है। नदियों को हमारे यहां मां का दर्जा दिया गया है। पुराणों में देवी देवता से लेकर राजा-महाराजा ऋषि मुनि द्वारा सुंदर सरोवर, जलाशय, जल प्रांतर, झरने, कुंए, बावड़ी आदि लोक हित में बनवाने का जिक्र मिलता है। हमारे कई व्रत त्योहार तो जल की महिमा से आपूरित है। मंत्र-श्लोक में भी जल का महत्व मिल जाता है।

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तये।
देवा भवत वाजिनः।
ऋग्वेद (१.२३.१९)
अर्थात- हे देवों! तुम अपनी उन्नति के लिए जलों के भीतर जो अमृत व औषधि है,उनको जान कर जल के प्रयोग से ज्ञानी बनो।

इस तरह हमारे सांस्कृतिक पर्व अपनी सामाजिक जिम्मेदारी भी निभाते हैं। जरूरत है हमें उनके रहस्यों को समझने की उनके संदेशों को पढ़ पाने की योग्यता विकसित करने की.

आत्मप्रदानं सौम्यत्वमभ्दयश्चैवोपजीवनम।
वेदव्यास (महाभारत, सभापर्व ७८.१९)
अर्थात- परहितार्थ आत्मदान, सौम्यत्वं तथा दूसरों को जीवनदान की शिक्षा जल से लेनी चाहिए।

हमारे यहां हर मौसम में हर पर्व जल के महत्व को प्रतिपादित करता है, जल का गुणगान करता है। जल को बचाने का संदेश भी देता है।

आपः सर्वस्य भेषजीः
ऋग्वेद (१०/१३७/६)
अर्थात-जल सब रोगों की एकमात्र दवा है। वैज्ञानिक भी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि मनुष्य शरीर में यदि जल की कमी आ जाए तो जीवन खतरे में पड़ जाता है। वर्तमान युग में जब जल की कमी की गंभीर चुनौतियां सारा संसार स्वीकार कर रहा है, जल को एक पेय के स्थान पर तत्व के रूप में पहचानना दार्शनिक धरातल पर जरूरी है।

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।
उशतीरिव मातरः।।
- यजुर्वेद (३६.१५)
अर्थात - जैसे मां अपनी संतान को दूध पिलाती है, वैसे ही हे जल! जो तुम्हारा कल्याणतम रस है उसे हमें प्रदान करें।

हमारे पुरखे जल, जलदान, जल के लिए प्याऊ खुलवाने का संदेश देते हैं। यहां तक कि पितरों को भी जल अर्पण करने की परंपरा है। तुलसी, पीपल और सूर्य को जल चढ़ाना अब धार्मिक के साथ वैज्ञानिक रूप से भी प्रामाणिक माना जाने लगा है।

- वैशाख मास में आने वाली एकादशी को प्याऊ खुलवाने से करोड़ों महायज्ञ का फल मिलता है.
- अक्षय तृतीया पर्व में जल कलश दान का विशेष महत्व है। मिट्टी के पात्र में जल भर कर दान का जिक्र पुराणों में मिलता है। इस दिन जल दान से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है.
- निर्जला एकादशी व्रत पंचतत्व के एक प्रमुख तत्व जल की महत्ता को निर्धारित करता है। इस व्रत में जल कलश का विधिवत पूजन किया जाता है। निर्जला व्रत में व्रती जल के बिना समय बिताता है। जल उपलब्ध होते हुए भी उसे ग्रहण न करने का संकल्प लेने और समयावधि के पश्चात जल ग्रहण करने से जल की उपयोगिता पता चलती है। व्रत करने वाला जल तत्व की महत्ता समझने लगता है।
- भगवान शिव की मूर्ति व शिवलिंग पर जल चढ़ाने का महत्व भी समुद्र मंथन की कथा से जुड़ा हुआ है। अग्नि के समान विष पीने के बाद शिव का कंठ एकदम नीला पड़ गया था। विष की ऊष्णता को शांत कर भगवान भोले को शीतलता प्रदान करने के लिए समस्त देवी-देवताओं ने उन्हें जल-अर्पण किया। इसलिए शिव पूजा में जल का विशेष महत्व माना है।

शिव स्वयं जल हैं

शिवपुराण में कहा गया है कि भगवान शिव स्वयं जल हैं।

संजीवनं समस्तस्य जगतः सलिलात्मकम
भव इत्युच्यते रूपं भवस्य परमात्मनः
अर्थात जो जल समस्त जगत के प्राणियों में जीवन का संचार करता है वह जल स्वयं उस परमात्मा शिव का रूप है। इसीलिए जल का अपव्यय नहीं वरन उसका महत्व समझकर उसकी पूजा करना चाहिए।

- गंगा सप्तमी पर्व मां गंगा का पुनर्जन्म भी माना जाता है अतः इसे गंगा जयंती के रूप में भी मनाया जाता है। जिस दिन ये धरती पर अवतरित हुईं उस दिन को गंगा दशहरा के रूप में मनाया जाता है। मोक्षदायिनी गंगा में स्नान करने से सरे पाप और दुःख कट जाते हैं पर अब कलयुग में गंगा भी पाप से दूषित होने लगी है। ऐसे में जल का महत्त्व और उसकी शुद्धता का जिम्मा और बढ़ जाता है।
- भगवान नृसिंह को वैष्णव संप्रदाय के लोग संकट के समय रक्षा करने वाले देवता के रूप में पूजते हैं। चूंकि ये क्रोधावतार हैं इसलिए इन्हें जल के सामान शीतल वस्तुओं का अर्पण किया जाता है। प्रतिस्पर्धा, अनजान शत्रुओं से बचने के लिए इन पर बर्फ मिला या उतना ठंडा जल चढ़ाया जा सकता है।
- वैशाख पूर्णिमा पर दान और पवित्र नदी या सरोवर में स्नान करने का भी विशेष महत्व होता है।
- वट सावित्री व्रत में बरगद वृक्ष चारों ओर घूमकर सौभाग्यवती स्त्रियां रक्षा सूत्र बांधकर पति की लंबी आयु की कामना करती हैं। विधि विधान से पूजन पश्चात वटवृक्ष/बड़ के के वृक्ष की जड़ों में पानी देतीं हैं। धरती पर इनकी जड़ें अपनी पकड़ से पानी को संचित रखतीं हैं व माटी को बांध के रखतीं हैं। कटने नहीं देतीं ऐसे ही पति -पत्नी का रिश्ता जन्मों तक कायम रहता है।
- इन पर्वों को मानाने के साथ हम प्रार्थना करें कि-

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शं योरभि स्रवन्तु नः।
अथर्ववेद (१.६.१)
सामवेद (३३)

मनीप्लांट लगाने के नियम क्या कहता है वास्तु

- वास्तु शास्त्रियों का मानना है कि मनी प्लांट के पौधे के घर में लगाने के लिए आग्नेय दिशा सबसे उचित दिशा है। इस दिशा में यह पौधा लगाने से सकारात्मक ऊर्जा का भी लाभ मिलता है।
- मनी प्लांट को आग्नेय यानी दक्षिण-पूर्व दिशा में लगाने का कारण यह है कि इस दिशा के देवता गणेश जी हैं जबकि प्रतिनिधि शुक्र हैं।
- गणेश जी अमंगल का नाश करने वाले हैं जबकि शुक्र सुख-समृद्धि लाने वाले। यही नहीं, बल्कि बेल और लता का कारण शुक्र ग्रह को माना गया है। इसलिए मनी प्लांट को आग्नेय दिशा में लगाना उचित माना गया है।
- मनी प्लांट को कभी भी ईशान यानी उत्तर-पूर्व दिशा में नहीं लगाना चाहिए।
- यह दिशा इसके लिए सबसे नकारात्मक मानी गई है, क्योंकि ईशान दिशा का प्रतिनिधि देवगुरु बृहस्पति माना गया है और शुक्र तथा बृहस्पति में शत्रुवत संबंध होता है। इसलिए शुक्र से संबंधित यह पौधा ईशान दिशा में होने पर नुकसान होता है। हालांकि इस दिशा में तुलसी का पौधा लगाया जा सकता है।
- कहा जाता है मनी प्लांट की जमीन छूती पत्तियों से सुख-समृद्धि में रुकावट आती है और यह सफलता में भी बाधक है। यदि ऐसा हो तो उसे किसी का सहारा देखकर ऊपर की ओर चढ़ाएं।
- मनी प्लांट की पत्तियां अगर सूखने लगें तो उसे तुरंत ही हटा दें।

जनमानस में ऐसी मान्यता है कि घर में मनी प्लांट लगाने पर सुख-समृद्धि में होने के साथ धन का आगमन बढ़ता है। इसी के चलते लोग अपने घरों में यह पौधा लगाते हैं। वास्तु शास्त्र के अनुसार मनी प्लांट का पौधा घर में उचित दिशा में नहीं लगाया गया है तो आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ सकता है।

गलत दिशा में लगा मनी प्लांट आपको आर्थिक नुकसान भी पहुंचा सकता है यानी आपको धन हानि, नुकसान का सामना भी करना पड़ सकता है।

गंगाजी को 'जाह्नवी' क्यों कहते हैं

धार्मिक शास्त्रों के अनुसार गंगा के विषय में एक प्रचलित कथा है। इसके अनुसार एक बार गंगा जी तीव्र गति से बह रही थी। उस समय जह्नु भगवान के ध्यान में लीन थे। उस समय गंगा जी भी अपनी गति से बह रही थी। उस समय जह्नु ऋषि के कमंडल और अन्य सामान भी वहीं पर रखा था।

जिस समय गंगा जी जह्नु ऋषि के पास से गुजरी तो वह उनका कमंडल और अन्य सामान भी अपने साथ बहा ले गई। जब जह्नु ऋषि की आंख खुली तो अपना सामान न देख वे क्रोधित हो गए। उनका क्रोध इतना गहरा था कि अपने गुस्से में वे पूरी गंगा को पी गए, जिसके बाद भगीरथ ऋषि ने जह्नु ऋषि से आग्रह किया कि वे गंगा को मुक्त कर दें। जह्नु ऋषि ने भगीरथ ऋषि का आग्रह स्वीकार किया और गंगाजी को अपने कान से बाहर निकाला। जिस समय यह घटना घटी थी, उस समय वैशाख पक्ष की सप्तमी तिथि थी। इस दिन को गंगा का दूसरा जन्म माना और कहा भी जाता है। अतः जह्नु की कन्या होने की कारण ही गंगाजी को 'जाह्नवी' कहते हैं।

कई लोग हनुमान चालीसा नियमित पढ़ते हैं और कई लोग मंगलवार या शनिवार को ही हनुमान चालीसा पढ़ते हैं। लेकिन बहुत कम लोग यह जानते हैं कि हनुमान चालीसा पढ़ने का सही तरीका क्या है। आओ जानते हैं कि किस तरह पढ़ना चाहिए हनुमान चालीसा की हमें मिले उत्तम फल। हनुमान चालीसा पाठ के नियम

हनुमान चालीसा पढ़ने का सही तरीका

आह्वान
हनुमान चालीसा का पाठ करने के पहले कई लोग उनका और श्रीरामजी का आह्वान करके पाठ नहीं करते हैं।

समय
हनुमान चालीसा का पाठ करने के लिए समय निर्धारित करना चाहिए। कई लोग जब उनका मन करता है तब उसका पाठ करते हैं और जब मन करता है तब नहीं। यह गलती कई लोग करते हैं।

स्थान
हनुमान चालीसा एक पवित्र जगह पर बैठकर ही करना चाहिए। खासकर या तो आपके घर के पूजास्थल पर, मंदिर में, तीर्थ क्षेत्र में या पहले से नियुक्त साफ सफाई करके पवित्र की गई जगह पर। हर कहीं या सड़क पर इसका पाठ नहीं होता।

भक्त बनें
कई लोग हनुमान चालीसा का पाठ तब करते हैं जबकि उनके उपर कोई संकट आता है। कहते हैं कि दुःख में सुमिरन सब करे सुख में करै न कोय। जो सुख में सुमिरन करें तो दुःख काहे को होऊ।

दोहे
कई लोग पाठ तो करते हैं लेकिन उसके दोहे नहीं पढ़ते हैं जो हनुमान चालीसा का ही अंग है।

चालीसा दिन तक पाठ
100 बार हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। सौ बार नहीं कर सको तो 11 बार करो। 11 बार न हो तो 9 बार करो। 9 बार नहीं कर सको तो 7 बार करो। 7 बार न कर सको तो 5 बार करो और 5 बार न कर सको तो 3 बार करो और 3 बार भी नहीं कर सकते हो तो 1 बार प्रतिदिन करो चालीसा और कम से कम 40 दिन तक करने के बाद उन्हें लंगोट जरूर भेंट करें।

अर्पण
हनुमान चालीसा का पाठ करने के पहले उनके चित्र या मूर्ति को पवित्र जल से पवित्र करके उन्हें तुलसी की माला या जनेऊ पहनाकर भक्ति भाव से उनकी पसंद का भोग अर्पण करके कई लोग हनुमान चालीसा नहीं पढ़ते हैं।

मध्यम स्वर
कई लोग हनुमान चालीसा का पाठ ऊंचे स्वर में अशुद्ध उच्चारण के साथ करते हैं या एकदम नीचे स्वर में इसका पाठ करते हैं। यह गलती सभी करते हैं।

पवित्रता
हनुमान चालीसा के पाठ के दौरान ब्रह्मचर्य, पवित्रता, शुद्धता, साफ सफाई का ध्यान कई लोग नहीं रखते हैं। महिलाएं यदि हनुमान चालीसा का पाठ कर रही हैं तो उन्हें इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वे उन्हें टच न करें। कई लोग यह गलती करते हैं।

खुद के नाम का उच्चारण
यह भी मान्यता है कि जहां पर लिखा है कि 'तुलसीदास सदा हरि चेरा कीजै नाथ हृदय मंह डेरा।' यहां तुलसीदास की जगह आपको आपके नाम का उच्चारण करना चाहिए। कई लोग यह गलती करते हैं इसीलिए उन्हें लाभ प्राप्त नहीं होता है।

दीपक
हनुमान चालीसा के पाठ के पहले दीप प्रज्वलित जरूर करना चाहिए। दीपक में जो बाती लगाई जा रही है वह भी लाल सूत (धागे) की होनी चाहिए। किसी भी स्थल पर पूजा करने के पूर्व दीप जरूर प्रज्वलित करें। हनुमान पूजा के दौरान जो दीपक जला रहे हों उसमें चमेली का तेल या शुद्ध घी होना चाहिए।

वस्त्र
हनुमानजी चालीका पाठ के दौरान सिर्फ एक वस्त्र पहनकर ही चालीसा का पाठ करें या उनकी पूजा करें।

आसन
हनुमान मूर्ति या चित्र को लकड़ी के पाठ पर लाल कपड़ा बिछाकर स्थापित करें और खुद कुश के आसन पर बैठकर ही चालीसा का पाठ करें या पूजा करें।

पाठ आवृत्ति
100 बार हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। सौ बार नहीं कर सको तो 11 बार करो। 11 बार न हो तो 9 बार करो। 9 बार नहीं कर सको तो 7 बार करो। 7 बार न कर सको तो 5 बार करो और 5 बार न कर सको तो 3 बार करो और 3 बार भी नहीं कर सकते हो तो 1 बार प्रतिदिन करो। हनुमान चालीसा का पाठ करते वक्त यदि आप इन बातों का ध्यान रखते हैं तो आपको हनुमान जी की कृपा जरूर प्राप्त होती है।

डाक्टरों की लापरवाही से महिला की गई जान

सरायपाली(समय दर्शन)। यह पूरा मामला सरायपाली शहर में संचालित भारती हॉस्पिटल में डाक्टरों की लापहरवाही से एक महिला की मौत की ख़बर सामने आया है।जिसको लेकर मृतक महिला के परिजनों में काफी आक्रोश दिखाई दिया दे रहा था साथ ही हॉस्पिटल के डॉक्टरों व मालिक के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है,नगर में संचालित भारती हॉस्पिटल पहले भी कई मौत व कारनामों से काफी सुर्खियों में रहता है और आज एक बार फिर भारती हॉस्पिटल का काला करतुत सामने आया है,जिसमें मृतक महिला के परिजनों ने बताया की महिला की मौत कल बीती सोमवार रात्रि 9 से 12 बजे के बीच में हो गयी थी,मगर हॉस्पिटल के डॉक्टरों व स्टाफ ने मृतक महिला के परिजनों को मौत की जानकारी नहीं दिया?, उल्टा गुमराह में रखा और मौत होंने के बात भी हॉस्पिटल के डॉक्टरों

व स्टाफ ने किसी को भी इस विषय में बताना जरूरी नहीं समझा,बल्कि मृतक महिला के परिजन जब हाल चाल पुछने गए तब डॉक्टर व स्टाफ के द्वारा गोल मटोल जवाब मिला तभी मृतक के परिजनों ने हॉस्पिटल में लगे सीसी टीवी कैमरे का फुटेज देखा तब जाकर यह मामला साफ-साफ नज़र आया की महिला की मौत रात्रि काल में हो चुका है और भारती हॉस्पिटल के डॉक्टर और स्टाफ महिला के स्थिति को नाजुक बताते हुए रायपुर रेफ़र करने की बात कर रहे थे आखिरकार इस भारती हॉस्पिटल को मौत का घर कहें तो कोई शक नहीं हैं।वहीं इस मामले में सरायपाली तहसीलदार ने मीडिया को कहा महिला की मौत की ख़बर रात्रि में आया था मगर पीएम रिपोर्ट के बाद ही कुछ विधिवत कार्यवाही किया जायेगा।वहीं मामले में वार्ड क्र.09 के पार्षद हेमंत प्रधान ने इस विषय में कड़ी निंदा की है साथ ही साथ इस पुरे मामले में हॉस्पिटल के डॉक्टरों की लापहरवाही बताया। आपको बता दें की महिला की मौत के बाद होस्पिटल के बाकी अन्य डॉक्टर भी उपस्थित नहीं मिले साथ ही मृतक महिला का मृत्यु रिपोर्ट भी नहीं दे रहे थे तब जाकर मृतक महिला के परिजनों ने थाना सरायपाली में पुरे मामले की जानकारी दी तब जाकर सरायपाली थाना का पुरा टीम हॉस्पिटल में दस्तक दिये तब जाकर कहीं मामला थमने का नाम लिया । मगर इस मामले को देखेंगे तो सरायपाली में संचालित भारती हॉस्पिटल एक मौत का घर से कम नहीं जहां पर आये दिन इस हॉस्पिटल में डॉक्टर की लापहरवाही से मौत होते रहता है आखिरकार भारती हॉस्पिटल में इतना काला कारतुत होने पर भी शासन प्रशासन हॉस्पिटल को बंद क्यों नहीं कर पा रही है , वहीं अधिकारी की बात करें तो कार्यवाही के नाम पर केवल खानापूर्ति किया जाता है क्या अधिकारी में निशुल्क इलाज के चलते बीक जाते हैं। मृतक महिला का नाम - रिंकी प्रधान, पति दिनेश प्रधान , वार्ड क्रं.09 के निवासी हैं जो बातें दिन डिलीवर केश के मामले में भारती हॉस्पिटल गये हुए थे जहां पर डिलीवरी के बाद बच्चा स्वस्थ रुप से मिला मगर बच्चे को जन्म देने वाली मां की बात करें तो डॉक्टरों के लापहरवाही ने नवजात बच्चे की मां की जान ले ली।

संक्षिप्त समाचार

ट्रक में भैसा भर कर ले जा रहे वाहन छोड़कर भागे ट्रक ड्राइवर तस्करी कीआशंका

पिथौरा (समय दर्शन)। पिथौरा ब्लाक अंतर्गत एनएच-53 कसहीबाहरा सुखानाला के पास पशु तस्करी कर भैंसों से ठसा-ठस भरा ट्रक पकड़ाया है। विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने पशु तस्करी कर रहे ट्रक को पकड़ा। तस्करी होने की सूचना स्थानीय प्रशासन व पुलिस को दिया गया है । क्रूरतापूर्वक सभी भैस भैसों को बाधा गया है ताकि ये भैंस भैंसा हिल डुल न पायें । इस अवेध परिवहन मे जिस क्रूरतापूर्वक तस्करी किया जाता है,अनेको बार देखा गया है ,,ऐसे मामले मे कई पशु वाहन मे ही तस्करी के दौरान मर जाते हैं ।इस घटना मे ट्रक ड्राइवर गाड़ी को छोडकर मौके से फ़रार हो गया है। बड़े शातिर है तस्कर ट्रक के सही नंबर प्लेट के उपर डुप्लीकेट नंबर प्लेट चिपका दिया गया है। सूचना पाकर स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची और विवेचना मे लिया है ।

जिले भर के प्रतिभागियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन

सरायपाली (समय दर्शन)। इंटर स्टेट टोंग इल मो डू चैंपियनशिप का शानदार आयोजन विगत दिनों पाइकमाल उड़ीसा में हुआ, जिसके मुख्य अतिथि पदमपुर विधायक बरसा सिंह बरिहा थे। प्रतियोगिता के दौरान टोंग इल मो डू फेडरेशन दिल्ली के कोषाध्यक्ष किरण मैडम, छत्तीसगढ़ सचिव उपेन्द्र प्रधान, कार्यक्रम प्रभारी जगन्नाथ साहू, प्रदेश अध्यक्ष मीरा पंडा उपस्थित रही। इस प्रतियोगिता में 17 जिलों के करीब 300 खिलाड़ियों ने भाग लिया। महासमुंद जिले के कोच सरोजनी खटकर को आयोजकों की तरफसे गोल्ड मेडल और शील्ड प्रदान किया गया। इस प्रतियोगिता में ग्राम सुखापाली के प्रतिभागियों ने भाग लिया। जिनमें नोनीबाई रत्नाकर एवं हेमंत ठाकुर ने गोल्ड मेडल, गायत्री रत्नाकर एवं चंद्रमणि रत्नाकर ने सिल्वर मेडल, हितेश रत्नाकर एवं सागर लहरे ने ब्रांज मेडल हासिल की। इस उपलब्धि पर छग सचिव उपेन्द्र प्रधान ने प्रतिभागियों को सम्मानित किया। क्षेत्रीय विधायक चातुरी नंद, रायपुर बरगढ़ रेल लाइन निर्माण समिति के अध्यक्ष अमर बग्गा, संयोजक दिलीप गुप्ता, अग्र शिरोमणि संस्था के मनोज अग्रवाल, पवन अग्रवाल, हाई स्कूल रोहिना प्रभारी प्राचार्य अजय कुमार जायसवाल, व्याख्याता कमलेश साहू, क्रांति कुमार साहू, रोहिना सरपंच जज्ञसिनी चूड़ामणि साहू आदि ने बधाई दी है।

पहले जन-प्रतिनिधि चुने जाते थे, अब बंधवा मजदूर - अरविंद नेताम

बिलासपुर (समय दर्शन)। हमर राज पार्टी के सर्वोच्च नेता अरविंद नेताम ने देश में घटते लोकतांत्रिक स्वरूप पर चिंता व्यक्त की, उन्होंने कहा कि उदारीकरण प्रारंभिक दौर में जब निजीकरण प्रारंभ हुआ तो हमने विश्वविद्यालय स्तर के प्रोफेसर से संवाद किया। उन्होंने निजीकरण के कारण जल, जंगल, जमीन आरक्षण पर खतरा तभी एससी - एसटी सांसदों ने पेसा कानून की संरचना की उन्होंने आगे कहा कि यह बात बहुत बुरी लगती है। जिस पेसा कानून के निर्माण में कांग्रेस की अहम भूमिका थी उसी कानून को छत्तीसगढ़ में कांग्रेस सरकार ने तोड़ा-मरोड़ा, इस प्रश्न पर की उस समय के सांसद शिक्षाविदों से इतनी बात करते थे तो क्या आज संवाद हिनता है। सदन में आरक्षित विधायकों की संख्या तो पूर्व से ज्यादा है। पर नेताम ने कहा अब राजनीतिक दल चुनाव में बंधुआ मजदूर खड़ा करते हैं। यही कारण है कि जनप्रतिनिधि जनता के प्रति जबाबदार न होकर पार्टी के पिछे दुम हिलाते हैं। बिलासपुर में हमर राज पार्टी ने अधिवक्ता सुदीप श्रीवास्तव को अपना लोकसभा प्रत्याशी बनाया है। और प्रत्याशी ने कहा कि बिलासपुर को उसका समृद्धशाली गौरव पुन: दिलाना है। इसलिए एक ऐसा जनप्रतिनिधि चुने जो सदन में बिलासपुर की आवाज बने।

प्राथमिक शाला सलिहाभाठा में बच्चों का वार्षिक परिणाम घोषित

शंकर लहरे / महासमुंद(समय दर्शन)। समीपस्थ प्राथमिक शाला सलिहाभाठा में बच्चों के शैक्षिक गतिविधियों का वार्षिक परिणाम प्रबंधन समिति एवं पालकों की उपस्थिति में घोषित किया गया। वर्ष भर किए परिश्रम का परिणाम जानने बच्चे खासे उत्साहित थे। बच्चों के कक्षा में प्रावीण्य स्थान के अलावा स्टूडेंट ऑफ दी ईयर छात्र-छात्रा, अधिक उपस्थिति, सक्रिय छात्र, सहयोगी छात्र, उत्साही छात्र का भी चयन किया गया।साथ ही कक्षा में प्रथम आने वाले छात्रों को युवा समूह से हितेश दीवान के द्वारा टी शर्ट पुरुस्कार प्रदान किया गया। पिरीत राम साहू और पंचराम ध्रुव के द्वारा बच्चों के गुल्लक में जमा करने के लिए सभी बच्चों के गुल्लक में 10 रुपया डालकर बच्चों को बचत का संदेश दिया। शाला का वार्षिक परिणाम इस प्रकार रहे - स्टूडेंट ऑफदी ईयर छात्र मेघराज साहू, छात्रा इंद्राणी साहू, सक्रिय छात्र हिमांशी साहू और मीरा ध्रुव, सबसे अधिक उपस्थिति वेनुष निषाद, सहयोगी छात्र रेशमी साहू, उत्साही छात्र वेदांश निषाद रहे।

इसी प्रकार कक्षावार परिणामों में कक्षा 1 में राखी साहू, मीरा ध्रुव, ओम दिवान, कक्षा 2 में हिमांशी साहू, प्रियंका यादव, वेनुष निषाद, कक्षा 3 में तन्मय निर्मलकर, रूखमणी ध्रुव, मुकेश ध्रुव, कक्षा 4 में मिथलेश ध्रुव, शिखर दीवान, चमनकुमारी यादव, कक्षा 5 में लालिमा दीवान, ललित ध्रुव, चाँदकुमार ध्रुव क्रमश: प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहे। सभी उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को गुल्लक तथा प्रतीक चिन्ह देकर और मुँह मीठा कर सम्मानित किया गया। पुरुस्कार प्राप्त कर बच्चे बहुत खुश लग रहे थे। प्रधानपाठक योगेश निर्मलकर, शिक्षक धर्मेंद्र ध्रुव, पुष्पलता पटेल ने आगे अच्छा करने के लिए बच्चों को शुभकामनाएं दी। इस मौके पर प्रबंधन समिति अध्यक्ष पिरीत राम साहू, घासुराम दीवान, पंचराम ध्रुव, भोजराम साहू, दयालु राम ध्रुव, हितेश दीवान, भोजराम साहू, कृपाराम ध्रुव, घनश्याम ध्रुव, गुलाब ध्रुव, बिसनी दीवान, हेमलता ध्रुव उपस्थित थे।

मतदाता जागरूकता म्यूजिक कंसर्ट, सात समुंदर पार गीत पर ज्योति यादव ने दी सुंदर नृत्य प्रस्तुति

सारंगढ़-बिलाईगढ़(समय दर्शन)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी धर्मेश कुमार साहू के मुख्य आतिथ्य में जिला प्रशासन द्वारा सारंगढ़ में मतदाता जागरूकता म्यूजिक कंसर्ट का आयोजन सोमवार की शाम को किया गया था। कार्यक्रम की शुरूआत आदित्य देवांगन ने बांसुरी वादन से किया। सत्यम शिवम सुंदरम का शीर्षक गीत मैक्स और मार्टिन सोनी ने युगल प्रस्तुत दी। इसी प्रकार भाव्या अग्रवाल ने मोर छत्तीसगढ़ महतारी की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के मध्य में सामूहिक रूप से मतदाता शपथ दिलाया गया और सुबह मतदाता दौड़ के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इसी के साथ-साथ मतदाता जागरूकता दूत के रूप में स्वच्छता दीदी, दूध, सब्जी विक्रेता सहित अन्य इच्छुक सहयोगियों को प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत किया गया। ये दूत अपने कार्य के साथ मतदान तिथि 7 मई को वोट देने के लिए लोगों को प्रेरित करेंगे। इस कार्यक्रम में गोविंद शर्मा इवेंट मैनेजर के माध्यम से कलाकार बुलाए गए थे, जिनके द्वारा गीत- दिल को हजार बार रोका, लग जा गले, बड़े अच्छे लगते हैं, ये दिल तुम बिन कहीं लगता नहीं और ओडिया गीत मोर गुलाबी गली रे, रोंगोबोती, पंजाबी गीत तारा रा, छत्तीसगढ़ी गीत आमा पान के पतरी आदि की प्रस्तुति दी गई। स्वीप नोडल अधिकारी हरिशंकर चौहान द्वारा पल पल दिल के पास तुम रहती हो, गीत का गायन किया गया। आयोजक के आव्हान पर ये देश है वीर जवानों का गीत पर सामूहिक रूप से नृत्य किया गया। कार्यक्रम के दौरान आयोजकों ने दर्शक दीर्घा को मंच पर आकर नृत्य करने का आव्हान किया

और दिव्या भारती अभिनीत गीत सात समुंदर पार गीत बजाया गया, जिस पर एक बालक और ज्योति यादव ने अपने नृत्य कला से पूरे कार्यक्रम में अपनी सबसे बेहतरीन प्रस्तुति दी। ज्योति यादव के नृत्य को सभी ने सराहा और उनके परफार्मेन्स के लिए तालियों की गड़गड़ाहट से उनका हौसला आफ़जाई की। उल्लेखनीय है कि ज्योति यादव साई शक्ति महिला स्वसहायता समूह से जुड़ी है। इस अवसर पर एसडीएम सारंगढ़ वासु जैन, डिप्टी कलेक्टर अनिकेत साहू, वर्षा बंसल, सीएमओ राजेश पांडेय, खाद्य अधिकारी चित्रकांत ध्रुव आदि उपस्थित थे। मंच का संचालन आर.बी. तिवारी ने किया।

सत्र 2023-24 के अंतिम दिन कक्षा 5वी के बच्चों को दी गयी विदाई

बसना(समय दर्शन)। बसना ब्लाक के शासकीय प्राथमिक शाला बिलखंड प्रधान पाठक विजय धृतलहरे स्थानीय परीक्षा परिणाम घोषित करने पश्चात कक्षा पांचवीं के बच्चों को विदाई देते हुए सभी बच्चों के पालक एवं जनप्रतिनिधियों ग्रामीणजनो को सादर प्रणाम करते हुए कहा कि, अभी अभी हमारा स्कूल भवन बनकर तैयार हुआ है, और आज से ग्रीष्म कालीन अवकाश प्रारंभ हो रहा है, जो 15 जून तक रहेगा,,इन 45 दिनो मे स्कूल स्टाफ और स्कूली बच्चे ग्रीष्मकालीन अवकाश मे रहेंगे। अत: शाला प्रबन्धन समिति व जनप्रतिनिधियों, पालको तथा सभी ग्रामवासियों को स्कूल की देखरेख करने व खाली समय मे अपने बच्चों को अगली कक्षा की घर पर यथा संभव तैयारी करने निवेदन किया गया । प्रधान पाठक ने कहा कि, आपकों अपने घर और मंदिर की तरह स्कूल की देखभाल करनी है।गरमी का प्रकोप चरम पर है इसलिए अपने बच्चों को सुबह 11 बजे से शाम 5 बजे तक घर से बाहर निकलने न दें ।इस दौरान मुख्य रूप से शिक्षक संतराम सिदार , देवराज सिदार , सोमनाथ चौहान,सोनू चौहान, रागनी प्रजापति, सोनालिका सिदार,यामनी बरिहा, सत्या बरिहा, योगेश बरिहा,रामाकांत चौहान,जयन्त पटेल, पूर्वश पटेल, टिकेश्वर चौहान, हेमंत बरिहा, तनमय भोई, यशवंत यादव,प्रतिक चौहान, रजवीर प्रजापति,रुद्र बरिहा, ट्विंकल सिदार,अंचल चौहान, रिया बरिहा, अंजना निषाद,सरधा चौहान, हसीना निषाद, मुस्कान चौहान, खिरकुमारी बरिहा, यशवनि बरिहा, तनुजा बरिहा,शाहिल प्रजापति, भुपेंद्र अग्रवाल,पुस्कर सिदार, तेजराम अग्रवाल,संजना निषाद, अंकिता बरिहा, सोनिया प्रजापति,मिरा बरिहा,वैदहि भोई , जर्नलिस्ट्स कुंजराम यादव एवं शालेय छात्र-छात्रा उपस्थित रहे।

अवैध शराब परिवहन तस्करों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

राजनांदगांव (समय दर्शन)। पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग के निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा तथा नगर पुलिस अधीक्षक पुष्पेन्द्र नायक के मार्गदर्शन में पुलिस चौकी तुमड़ीबोड़ द्वारा दिनांक 28 अप्रैल को ग्राम भ्रमण एवं पेट्रोलिंग दौरान मुखबीर सूचना पर तुमड़ीबोड़ बस स्टैंड के पास घेराबंदी करने पर एक व्यक्ति बिना नंबर बैगनी रंग के जूपीटर वाहन को पुलिस को देखकर तुमड़ीबोड़ बस्ती की ओर भागने का प्रयास करने पर पुलिस द्वारा दौड़ाकर पकड़कर चेक करने पर आरोपी जावेद पटेल पिता दाऊत पटेल, उम्र 26 वर्ष, साकिन अटल आवास, पेंड्री, स्थायी पता ग्राम दुधगांव, थाना ढोकी, जिला उस्मानाबाद, महाराष्ट्र के कब्जे के बिना नंबर बैगनी रंग के जूपीटर वाहन की पैरदानी में दो प्लास्टिक बोरी में रखे करीब 75 पौवा देशी प्लेन शराब एवं जूपीटर वाहन के डिक्की में रखे

45 पौवा जम्मू डिलक्स व्हीस्की पाये जाने पर आरेपी के कब्जे से कुल 120 पौवा शराब के संबंध में वैध दस्तावेज नोटिस देकर मांग करने पर आरोपी द्वारा उक्त शराब अपने साथी साजन यादव पेंड्री निवासी का होना बताने पर वैधानिक कार्यवाही करते हुए आरोपी जावेद पटेल से दो प्लास्टिक बोरी में रखे करीब 75 पौवा देशी प्लेन शराब एवं जूपीटर वाहन के डिक्की में रखे 45 पौवा जम्मू डिलक्स व्हीस्की शराब कुल 120 पौवा शराब जुमला 21.600 लीटर कीमती 12,600 रूपये एवं बिना नंबर जूपीटर स्कूटी कीमती करीब 80,000 रूपये कुल जुमला 92,600 रूपये को गवाहों के समक्ष जप्त कर कब्जा पुलिस लिया गया एवं आरेपी जावेद पटेल को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया गया तथा अन्य फ़रार आरोपी की पता तलाश की जा रही है। उक्त कार्यवाही में चौकी प्रभारी उप निरीक्षक कैलाश चंद्र मरई, सउनि अनिल कुमार यादव, आरक्षक प्रमोद करियारे की सराहनीय भूमिका रही।

सरकारी अस्पताल के मुख्य गेट के सामने दोनो तरफ अवैध कब्जा कर ठेला का संचालन

एंबुलेंस सहित सामान्य जनों को आने जाने में होने लगी है परेशानी

पाटन (समय दर्शन)। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पाटन वैसे तो अपने स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर दूर प्रदेश सहित देश में अपना अहम स्थान बनाया है। लेकिन अब जब अस्पताल के प्रवेश द्वार पर ही अवैध कब्जा धारी इसकी सुंदरता पर ग्रहण लगा रही है। अस्पताल के बाउंड्रीवाल में बने मुख्य प्रवेश द्वार के दोनो छोर पर दो व्यक्ति अवैध रूप से कब्जा कर ठेला का संचालन कर रहा है। इससे अस्पताल की सुंदरता पर तो ग्रहण तो लग रही है वही साथ ही साथ एंबुलेंस को आने जाने में परेशानी होती है। वही इस अस्पताल में आने जाने वाले बाइक सवार , पैदल आने वाले मरीजों तथा इसके परिजनों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पाटन में मुख्य द्वार के सामने ही प्रवेश द्वार पर दो लोगो द्वारा दोनो छोर पर ठेला गुमटी लगाकर अतिक्रमण किया गया है। इस ठेला गुमटी के कारण अस्पताल आने जाने वालो को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। अस्पताल में आने वाले लोग गाड़ी गेट के सामने खड़ी करते है। अतिक्रमण होने के कारण गाड़ी भी व्यवस्थित रूप से खड़ा नही कर पा रहे हैं । मरीजों के परिजनों का कहना है की मुख्य गेट के सामने ही अतिक्रमण कर ठेला गुमटी होने से बाहर निकलते समय बाहर से आने वाले

वाहन नहीं दिख पाता। इस कारण अक्सर दुर्घटना की आशंका बनी रहती है।

अस्पताल के सामने लगता है नशेड़ियों का जमावड़ा : अस्पताल के सामने गेट में ही अवैध रूप से ठेला गुमटी संचालन किए जाने के कारण अस्पताल के स्टाफ को भी परेशानी का सामना करना पड़ता है। इन ठेला गुमटी में दिन भर अस्पताल में आने जाने वाले लोगो का डेरा लगा रहता है। इस कारण गेट में ही भिड़ लग जाता है। कभी कभी तो गंभीर मरीज को अस्पताल तक ले जाने के लिए रास्ता ही नही मिल पाता। इससे परेशानी बढ़ जाता है। शाम होते ही यहां पर गंजा पीने वाले और शराब पीने वाले भी आने लगते हैं ।

अस्पताल के सामने ही तंबाकू, जर्दा बेच रहे है : वैसे तो स्कूल ओर अस्पताल के सामने शासन ने नशे का समान बेचना प्रतिबंध किया है। लेकिन अस्पताल के सामने मुख्य द्वार पर ही ठेला गुमटी लगाने वाले द्वारा तंबाखू, जर्दा युक्त गुटका , सिगरेट का भी बिक्री किया जाता है। जिस पर भी रोक लगानी चाहिए। बताया जाता है गुटखा खाकर वही पर थूक भी देते है। इसके अलावा गुमटी ठेला से निकलने वाला कचरा भी वहीं आस पास फेंक देते है।

अस्पताल के मुख्य द्वार पर ही ठेला गुमटी लगा दिया है। जिससे वाहनों को आने जाने में परेशानी होती है। इसकी सूचना नगर पंचायत को दी जाएगी।

डॉक्टर आशीष शर्मा
बी एम ओ पाटन

खबर-खास

आपातकाल तो प्रावधान के तहत लगा, नारी अस्मिता पर दोगलापन भाजपा की असलियत- टाकेश्वर पाटले

बिलासपुर (समय दर्शन)। बिल्हा विधानसभा के विधायक ने राहुल गांधी से पूछा उसकी दादी ने जब इमरजेंसी लगाई तो क्या संविधान खतरे में नहीं था ? इस पर कांग्रेस के युवा नेता टाकेश्वर पाटले विधायक महोदय से तीखे प्रश्न पूछे उन्होंने कहा कि भाजपा के विधायक बताएं इंदिरा गांधी ने भारत के संविधान में प्रदत्त लिखित व्यवस्था के तहत ही एक निर्णय लेकर इमरजेंसी लगाई थी और उससे आम हिंदुस्तानी को कोई तकलीफ नहीं थी। आज तो बगैर आपातकाल के किसान को ईडी का नोटिस मिल रहा है यहां तक की एक राज्यसभा सदस्य ने तो भाजपा पर यहां तक आरोप लगाया कि ईडी ने उन्हें ?600 के एक ट्रांजैक्शन के मामले में नोटिस दिया। युवा नेता ने कहा कि इस देश का संविधान एक तरफ कठोर है तो दूसरी तरफ लचीला है। और जनहित के लिए इसमें समय-समय पर संशोधन हुए विधायक महोदय इस बात का जवाब दें कि भाजपा द्वारा लाया गया इलेक्टोरल बॉन्ड में जो चंदा खोरी हुई, भयादोहन हुआ जिसे देश की सर्वोच्च अदालत ने असंवैधानिक कहा उसे पर उन्हें क्या कहना है। भाजपा तो न्यायपालिका का अपमान ही करती है तभी तो केंद्रीय चुनाव आयुक्त की नियुक्ति के संबंध में उच्चतम न्यायालय ने जो व्यवस्था दी उसे प्रधानमंत्री ने तत्काल पलटा और के चू आ की नियुक्ति की , मणिपुर में पिछले 1 साल से जो गंभीर हालत है के बावजूद राष्ट्रपति शासन नहीं लगता और धारा 355 का इस्तेमाल भी चोरी छिपे किया जाता है। जिसके तहत कानून व्यवस्था का अधिकार केंद्र के पास आ गया है नारी शक्ति को केवल वोट बैंक मानने वाले बताएं कि कर्नाटक लोकसभा क्षेत्र हसन के उम्मीदवार प्ले बाय 2870 अश्लील वीडियो क्लिपिंग के विलेन के लिए प्रधानमंत्री वोट मांगने क्यों गए।

जिला स्तरीय मछुआ सम्मेलन पाटन में 2 मई को

पाटन (समय दर्शन)। जिला स्तरीय मछुआ सम्मेलन का आयोजन पाटन में 2 मई दिन गुरुवार को दोपहर 2:00 बजे से केवट निषाद भवन अटारी में रखा गया है। कार्यक्रम में महासमुंद के पूर्व सांसद चंदूलाल साहू, मछुआ प्रकोष्ठ छत्तीसगढ़ के संयोजक नेहरू निषाद ,दुर्ग जिला भाजपा अध्यक्ष जितेंद्र वर्मा ,पाटन विधानसभा संयोजक एवं जिला उपाध्यक्ष भाजपा दिलीप साहू, छत्तीसगढ़ केवट निषाद समाज संगठन सचिव अशोक निषाद, दुर्ग जिला निषाद समाज घनश्याम निषाद, मछुआरा प्रकोष्ठ के दुर्ग जिला संयोजक कमलेश फेकर ,मछुआरा प्रकोष्ठ कोषाध्यक्ष नेतराम निषाद सहित समाज के वरिष्ठ जन उपस्थित रहेंगे।

भाजपा में शामिल हो जाने के बाद भी कहलाते हैं कांग्रेस के पूर्व नेता

बिलासपुर (समय दर्शन)। कांग्रेस छोड़कर जनाधार विहीन जो नेता भाजपा में जाते हैं उनकी बखत इतनी भी नहीं होती की पार्टी कार्यालय उन्हें भाजपा नेता लिख दे। कल बिलासपुर कार्यालय से एक अधिकृत प्रेस नोट जारी हुआ जिसमें विष्णु यादव के श्रीमुख से यह बयान जारी हुआ कि यादव समाज का अपमान हुआ है और राहुल गांधी माफी मांगे। भाजपा के लिए कांग्रेस छोड़कर आने वाले के लिए यही एक काम है कि वे अपनी पूर्व पार्टी को कोसे और आलोचना करें। ये नेता याद रखें की इस काम की अवधि बहुत छोटी होती है, और बोलने कहने की जो स्वतंत्रता कांग्रेस में है वैसी भाजपा में कभी नहीं होती। पिछले महीने में कांग्रेस छोड़कर भाजपा में गए कितने नेताओं ने स्वतंत्र रूप से मीडिया से बात की जिन्हें मीडिया से बात करने का अवसर मिला उन्हें क्या कहना है, कितना बोलना है, कब बोलना बंद करके बाहर निकल जाना है का भी निर्देश पार्टी पहले से दे देती है।

बुजुर्ग और दिव्यांग 1 और 3 मई को कर पाएंगे घर बैठे मतदान

सारंगढ़-बिलाईगढ़ (समय दर्शन)। लोकसभा निर्वाचन अंतर्गत रायगढ़ और जांजगीर चांपा संसदीय क्षेत्र में घर बैठे (होम वोटिंग) डाकमत से मतदान के लिए कलेक्टर एवं निर्वाचन अधिकारी धर्मेश कुमार साहू के निर्देश पर जिले के ऐसे 85 वर्ष और उससे अधिक उम्र के बुजुर्ग और दिव्यांग मतदाता जिन्होंने घर पर ही मतदान करने के लिए सहमति पत्र का आवेदन भरा है, उन सभी चिन्हित मतदाता के लिए 12 जिला निर्वाचन दल 1 और 3 मई को मतदान कराने के लिए उनके घर के पते पर जाएंगे। रायगढ़ लोकसभा में ऐसे 68 मतदाता हैं, जिनके लिए 9 मतदान दल बनाया गया है। इसी प्रकार जांजगीर चांपा लोकसभा में 15 मतदाता हैं, जिनके लिए 3 मतदान दल बनाया गया है। कलेक्टर ने सभी सहमति पत्र भरने वाले मतदाताओं से अपील किया है कि वे 1 और 3 मई को अपने घर पर रहें ताकि मतदान दल उनके घर आएं तो उनके द्वारा डाकमत के माध्यम से मतदान कार्य किया जा सके। इन मतदान दलों में एक सेक्टर अधिकारी, दो मतदान अधिकारी, एक माइक्रो ऑब्जर्वर, एक रूट प्रभारी (पटवारी), एक वीडियोग्राफर, एक सुरक्षाकर्मी और एक वाहन चालक शामिल है।

फिजिकल दक्षता प्रतियोगिता परीक्षा में विजयी रहे प्रतिभागियों को विधायक उत्तरी ने किया पुरस्कृत

सारंगढ़ (समय दर्शन)। आराधना रूरल हेल्पेज फ उंडेशन एवं मार्गदर्शन फिजिकल एकेडमी सारंगढ़ द्वारा आयोजित प्रतियोगिता परीक्षा सारंगढ़ के खेल मैदान में 28.04.2024 को संपन्न हुआ छत्तीसगढ़ के सभी जिले से आए हुए प्रतिभागी अपने-अपने साहस का परिचय दिया। दिनांक 27.04.2024 को बाहर से आए हुए प्रतिभागियों को आराधना फाउंडेशन के द्वारा निशुल्क भोजन प्रदान किया गया। बालक वर्ग में प्रथम स्थान मस्तूरी के भूपेंद्र कैवर्त ने प्राप्त किया जिसे श्री श्याम जांगड़े सामाजिक कार्यकर्ता सारंगढ़ द्वारा 15500 रुपए का नगद पुरस्कार के साथ शील्ड, प्रमाण पत्र एवं मैडल से सम्मानित

किया गया। द्वितीय स्थान सरसीवा के धनेश्वर यादव ने प्राप्त किया जिसे श्री सम्मान जांगड़े शिक्षक द्वारा 10500 रुपए का नगद पुरस्कार शील्ड, प्रमाण पत्र एवं मैडल से सम्मानित किया गया। तृतीय स्थान पर बरमकेला के दुर्योधन यादव ने प्राप्त किया और 12 विजेता प्रतिभागियों को 1100-1100 रुपए का पुरस्कार प्रमाण पत्र एवं मैडल से गिरीश कुमार जोल्हे, मनहर कंप्यूटर, अंकित किराना स्टोर्स आदि सहयोगीयों के द्वारा सम्मानित किया गया। वहीं महिला वर्ग में प्रथम स्थान मधुवा के सोनावती ने प्राप्त किया जिसे विधायक श्रीमती

उत्तरी गणपत जांगड़े द्वारा 15500 रुपए का नगद पुरस्कार सील्ड, प्रमाण पत्र एवं मैडल से सम्मानित किया गया। द्वितीय स्थान कबीरधाम के रामकली ने प्राप्त किया जिसे श्रीमती सोनी अजय बंजारे द्वारा 10500 रुपए कनागत पुरस्कार सील्ड, प्रमाण पत्र एवं मैडल से सम्मानित किया गया। तृतीय स्थान सूरजपुर के अंजू सिंह ने प्राप्त किया तथा 12 और प्रतिभागियों को 1100-1100 रुपए के साथ प्रमाण पत्र एवं मैडल से सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता को सफल बनाने में एकेडमी के संचालक इन्द्रजीत मनहर, फिजिकल कोच वीरेंद्र कुमार, प्रेम पटेल, आलोक कुमार, प्रहलाद कैवर्त, राकेश दिवाकर, ठेठवार सर, मोहन लाल कैवर्त, साहू मैडम, प्रहलाद सोनी, रवीना जांगड़े, मनीष जायसवाल, अनिल सिदार, रोशन अजय, सभी वैलिंटियर आदि का विशेष सहयोग रहा। इस दौरान शत प्रतिशत मतदाता जागरूकता अभियान शपथ समारोह का आयोजन भी किया गया जिसमें आए हुए सभी प्रतिभागी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिए। राज्य भर से आए हुए सभी प्रतिभागियों को आराधना फाउंडेशन एवं मार्गदर्शन फिजिकल अकादमी के द्वारा उनके उज्जवल भविष्य की बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

जिले में मूलभूत प्रशासनिक सुविधाओं को करें मजबूत, लोगों को सभी सुविधाओं का मिले लाभ-कलेक्टर दीपक अग्रवाल

गरियाबंद (समय दर्शन)। जिले में लोकसभा निर्वाचन के मतदान होने के पश्चात कलेक्टर दीपक कुमार अग्रवाल ने आज समय सीमा की समीक्षा बैठक में लोकसभा निर्वाचन 2024 के तहत निर्वाचन कार्य में लगे हुए सभी अधिकारी कर्मचारियों को सफलतापूर्वक मतदान कार्य सम्पन्न कराने पर बधाई देते हुए कहा कि सभी लोगों के सहयोग से लोकसभा निर्वाचन 2024 में मतदान के प्रतिशत में विगत चुनाव के अपेक्षा वृद्धि हुई है।उन्होंने समीक्षा बैठक में जिला अधिकारियों को अब वे अपने-अपने प्रशासनिक कार्यो,जनहित एवं प्रगतिरत निर्माण कार्यो में गति लाये। कलेक्टर ने अधिकारी-कर्मचारी प्रशासन के कार्यो को गंभीरतापूर्वक करें और विभागीय कार्यो में प्रगति लाये। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने सभी अधिकारियों को कहा कि मूलभूत प्रशासनिक सेवाएं प्रदान करने के लिए सक्रियता और गंभीरता से काम

किया जाये।साथ ही प्रगतिरत निर्माण और विकास कार्यो में भी तेजी लाये। उन्होंने कहा कि जिले के आश्रम-छात्रावास के निरीक्षण के लिए जिन-जिन अधिकारियों को दायित्व सौंपा गया है,वे प्रत्येक माह ऐसे आश्रम छात्रावास का निरीक्षण कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करे।ताकि कहीं कुछ समस्या है तो उसका निराकरण समय पर किया जा सके। कलेक्टर ने कहा कि खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग द्वारा प्रदेश के राशन दुकानों में अप्रैल एवं मई माह का पात्रतानुसार चावल आबंटन किया गया है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली एवं सार्वभौम पीडीएस के अंतर्गत गरियाबंद जिले के सभी राशन कार्डधारियों को अप्रैल एवं मई दो माह का एकुमश्त राशन मिल रहा है। वर्तमान में 98 प्रतिशत राशन का भण्डारण कर वितरण का कार्य किया जा है।जिले के राशनकार्डधारी अपने संबंधित शासकीय उचित मूल्य की दुकानों से माह अप्रैल एवं मई 2024 (दो माह) का चावल एक साथ प्राप्त कर रहे हैं।इसके अतिरिक्त शेष राशन सामग्री जैसे-नमक, शक्कर केरोसीन एवं अनुसूचित क्षेत्रों में चना की मासिक पात्रता के अनुसार ही प्राप्त होगी।ग्रामीणों की जानकारी के लिए गांवों में मुनादी भी कराये। जिले के सभी आगंनबाड़ियों में विद्युत कनेक्शन शत प्रतिशत कराये।

वोट डालने के बाद पत्रकारों ने कहा हमने तो मतदान कर दिया अब आपकी बारी

दुर्ग (समय दर्शन)। चुनाव आयोग ने पहली बार मीडिया कर्मियों को भी डाक मतपत्र से मतदान करने की सुविधा मुहैया कराया है। दुर्ग के वरिष्ठ पत्रकार पवन देवांगन और धनेंद्र सिंह चंदेल ने भिलाई इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालॉजी स्थित मतदान कक्ष में अपने मताधिकार का प्रयोग किया और लोगो को संदेश दिया कि हमने अपने मताधिकार का इस्तेमाल कर लिया, अब आप लोगो की बारी है। पत्रकार द्वय ने आगामी 7 मई को लोकसभा निर्वाचन में अधिक से अधिक मतदाताओं से वोट डालने की अपील की है।

अभी तक सरकारी महकमे के वे लोग ही डाक मतपत्रों से अपने मताधिकार का उपयोग करते थे, जिनकी चुनाव में ड्यूटी लगी हो,

या फिर सुरक्षा बल में कार्यरत हो। लेकिन इस बार निर्वाचन आयोग ने लोकतंत्र के चौथे प्रहरी मीडिया कर्मियों को भी इस दायरे में लाकर सुविधा देने का अभिनव प्रयास किया है। इस कड़ी में जिन पत्रकारों को चुनाव आयोग ने निर्वाचन कार्यों की रिपोर्टिंग के लिए अनुमति प्रदान किया है, उन्हें डाक मतपत्र इस्तमाल की सुविधा दी है। चुनाव के दिन अब ये पत्रकार अपना वोट डालने की चिंता छोड़कर आम चुनाव का वृहत कवरेज कर सकेंगे। छत्तीसगढ़ निर्वाचन आयोग के इस पहल का पत्रकार जगत ने भूरी भूरी प्रशंसा की है। साथ ही आमजनो से अधिक से अधिक संख्या में मतदान कराने की अपील भी की है।

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने टोयोटा रुमियन का नया ग्रेड पेश किया

बैंगलोर। टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने आधिकारिक तौर पर टोयोटा रुमियन के नए ग्रेड जी-एटी की बुकिंग और कीमत की घोषणा की है। साथ ही ई-सीएनजी बुकिंग भी फिर से शुरू की है। नए लॉन्च किए गए जी-एटी वैरिएंट से उम्मीद है कि यह अपने बेजोड़ स्पेस और आराम, बेहतरीन ईंधन दक्षता, स्टाइलिश और प्रीमियम एक्सटीरियर डिज़ाइन के साथ रुमियन की बाज़ार में स्वीकार्यता को और बढ़ाएगा। टीकेएम की यह नवीनतम पेशकश 13,00,000 रुपये की आकर्षक एक्स-शोरूम कीमत पर उपलब्ध होगी, जिसकी डिलीवरी 5 मई से शुरू होने की उम्मीद है। ग्राहक 11,000 रुपये की बुकिंग फीस के साथ किसी भी अधिकृत डीलरशिप पर या ऑनलाइन इस वाहन की बुकिंग कर सकते हैं। टोयोटा रुमियन जी-एटी वेरिएंट 6-स्पीड ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ 1.5-लीटर के सीरीज पेट्रोल इंजन से संचालित है, जिसमें नियो ड्राइव (आईएसजी) तकनीक है जो प्रतिक्रियाशील प्रदर्शन सुनिश्चित करती है। जहां पेट्रोल ग्रेड का पावर आउटपुट 6000 आरपीएम पर 75.8 किलोवाट और 4400 आरपीएम पर 136.8 एनएम का टॉर्क है, वहीं सीएनजी ग्रेड 5500 आरपीएम पर 64.6 किलोवाट का आउटपुट और 4200 आरपीएम पर 121.5 एनएम का टॉर्क बढ़ाता है। टोयोटा रुमियन अब नियो ड्राइव एमटी: एस, जी और वी ग्रेड के सात वेरिएंट में उपलब्ध है। नियो ड्राइव एटी: एस, जी और वी ग्रेड। ई-सीएनजी: एस ग्रेड ग्राहकों के लिए विकल्पों की एक विस्तृत श्रृंखला पेश करता है। जी-एटी वैरिएंट उन्नत तकनीक से सुसज्जित है, जिसमें वायरलेस एंड्रॉइड ऑटो और ऐप्पल कारप्ले के साथ 17.78 सेमी स्मार्टप्ले कास्ट टचस्क्रीन ऑडियो सिस्टम शामिल है। टोयोटा आई -कनेक्ट से सुसज्जित, यह जलवायु, लॉक/अनलॉक, खतरनाक रोशनी और कई अन्य कनेक्टेड सुविधाओं के लिए रिमोट कंट्रोल प्रदान करता है।

शक्ति पंप्स ने हासिल किया अब तक का सबसे ज्यादा रेवेन्यू और प्रॉफिट

पीथमपुर। सोलर स्टेनलेस-स्टील सबमर्सिबल पंप, प्रेशर बूस्टर पंप, पंप-मोटर्स, कंट्रोलर और इनवर्टर सहित अन्य उत्पादों के अग्रणी निर्माता शक्ति पंप्स (इंडिया) लिमिटेड ने 31 मार्च 2024 को समाप्त तिमाही और वित्तीय वर्ष के अपने वित्तीय परिणामों की घोषणा की। शक्ति पंप्स (इंडिया) लिमिटेड के चेयरमैन दिनेश पाटीदार ने कंपनी के प्रदर्शन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि, FY24 शक्ति पंप्स (इंडिया) लिमिटेड के लिए एक उल्लेखनीय वर्ष रहा है, क्योंकि कंपनी ने रेवेन्यू और प्रॉफिट के मामले में अब तक का मजबूत प्रदर्शन किया है। यह हमारी गवर्नमेंट और एक्सपोर्ट बिजनेस दोनों में हमारे उत्कृष्ट प्रदर्शन को बताता है, जिसने FY24 में क्रमश: 52% और 23त्न की रेवेन्यू में ग्रोथ दर्ज की है। हमारी प्रभावशाली ऑर्डर बुक, राशि 2,400 करोड़ रुपये, 31 मार्च 2024 तक हाल ही में 250.62 करोड़ रुपये के तीन नए ऑर्डर के साथ जनवरी 2024 की शुरुआत से हरियाणा और महाराष्ट्र में विस्तारित हुआ है। शक्ति पंप्स (इंडिया) लिमिटेड अपने ऑर्डर बुक के निरंतर विस्तार के बारे में आशावादी है, जो कृषक समुदाय के बीच सोलर पंपों को बढ़ाने के लिए लगातार प्रयासरत है।

कलेक्टर अग्रवाल ने जिले के सभी राजस्व अधिकारियों की बैठक लेकर उनके कामकाज की समीक्षा की

गरियाबंद (समय दर्शन)। कलेक्टर दीपक कुमार अग्रवाल ने जिले के सभी राजस्व अधिकारियों की बैठक लेकर उनके कामकाज की विस्तारपूर्वक समीक्षा की।उन्होंने राजस्व अधिकारियों से विभिन्न प्रकरणों और उनके निराकरण के संबंध में जानकारी लेते हुए अविवादित व विवादित नामांतरण, बंटवारा, सीमांकन, रजिस्ट्री, खाता विभाजन, निराकृत, नक्शा शुद्धिकरण, अभिलेख शुद्धता, अभिलेख जमा करने की स्थिति,राजस्व वसूली,नजूल,कृषि भूमि एवं आबादी पट्टों पर भू-स्वामी पर अधिकार किये जाने संबंधी आवेदनों के निराकरण की स्थिति,7500 वर्गफीट तक शासकीय भूमि का व्यवस्थापन, आबंटन, मसाहती/ असर्वेक्षित ग्रामों का सर्वेक्षण,पटवारी की डिजिटल हस्ताक्षर से अभिलेखों के सत्यापन की स्थिति, आधार सीडिंग की स्थिति,भू-नक्शा अपडेशन,वन अधिकार पट्टा हेतु आवेदन/जांच हेतु आवेदनों की

स्थिति,हाईकोर्ट में लंबित प्रकरणों की जानकारी,लोक सेवा गारंटी अधिनियम 2011 का क्रियान्वयन एवं अद्यतन प्रगति,स्लम पट्टों,नजूल पट्टों,आबादी भूमि धारकों को मालिकाना हक प्रदान करने में हुई प्रगति, अवैध खनिज उत्खनन पर कार्यवाही की जानकारी, नक्शों के जियोरेफेरेसिंग के लिए अनडिस्पुटेड पॉइंट के चयन सम्बधित ग्रामवार जानकारी, जनचौपाल जन शिकायत एवं अन्य आवेदनों की निराकृत लंबित एवं शेष जानकारी, लोकसेवा केन्द्र के अंतर्गत निराकृत लंबित शेष ओवदनों की जानकारी और सूचना के अधिकार के अंतर्गत निराकृत लंबित एवं शेष आवेदनों की जानकारी पर विस्तार से जानकारी ली।उन्होंने इस दौरान कहा कि राजस्व प्रकरणों का समय-सीमा में निराकरण कर आम जन की मदद करें।कलेक्टर ने राजस्व अधिकारियों कि अनुभागवार/ तहसीलवार राजस्व प्रकरणों की समीक्षा करते हुए प्रकरणों को यथाशीघ्र शत् प्रतिशत् निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिये।बैठक में राजस्व अधिकारियों को लोक सेवा गारंटी अधिनियम अंतर्गत प्राप्त आवेदनों को विहित समयावधि में निराकरण कर तहसीलदारो को किसान हित में नक्शा अद्यतीकरण करने हेतु निर्देश दिये गये।

अपना सूपड़ा साफहोते देख कांग्रेस संविधान और आरक्षण खत्म होने का भ्रम फैला रही है-विष्णुदेव साय

कांग्रेस के नेता मोदी लहर से घबराकर मानसिक संतुलन खो चुके हैं, इसलिए कर रहे दुष्प्रचार-विष्णुदेव साय

जांजगीर चांपा (समय दर्शन)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा, देश में चल रही मोदी लहर से घबराकर कांग्रेसी नेता अपना मानसिक संतुलन खो चुके हैं। इसलिए आज कांग्रेस भ्रम फैला रही है कि मोदी की सरकार पर बनने पर संविधान और आरक्षण खत्म हो जाएगा। कांग्रेस के इस झूठ के झांसे में जनता नहीं आने वाली है। मोदी की गारंटी है कि न तो संविधान खत्म होगा और न ही आरक्षण की व्यवस्था। आदिवासी और दलितों, पिछड़ों को आरक्षण की पूर्व की भांति लागू रहेगा। कांग्रेस मुद्दाविहिन हो चुकी है, इसलिए अब कांग्रेस मोदी की गारंटी के बारे में दुष्प्रचार कर रही है। झूठे वादों करने वाली कांग्रेस को छत्तीसगढ़ की जनता सबक सीखाएगी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाएगी। विष्णुदेव साय ने कहा कांग्रेस कहती है कि महतारी वंदन योजना सिर्फ चुनाव तक ही चलेगी। अब कांग्रेस इसके बारे में भी भ्रम फैलाने काम

कर रही है। कहा-मोदी की गारंटी है कि महतारी वंदन योजना के तहत हर महीने महिला के खाते में हजार इसी तरह दिए जाएंगे। कांग्रेस के झूठ और दुष्प्रचार पर विश्वास मत करिए। इनको अपनी करारी हार दिखने लगी है। इनके सभी प्रत्याशी चुनाव हारने जा रहे हैं। इसलिए कांग्रेस ने अब झूठ को ही हथियार बना लिया है। विष्णुदेव साय ने कहा कि ये लोकसभा चुनाव बहुत महत्वपूर्ण है कि क्योंकि देश की सत्ता पर कांग्रेस को काबिज नहीं होने देना है। क्योंकि ये कांग्रेसी तुष्टिकरण की राजनीति कर रहे है। इस बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को देश का तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाना है। मोदी जी कांग्रेस और इंडी गठबंधन दलों की तरह परिवारवाद की राजनीति नहीं करते है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का परिवार सभी देशवासी हैं। उनके लिए वह 24 घंटे में 18 घंटे तक दिनरात काम करते हैं। लेकिन कांग्रेस झूठे वादे कर वोट लेते हैं फिर सत्ता पाने के बाद जनता को लूटने में लग जाते हैं। विष्णुदेव साय ने कहा-प्रधानमंत्री मोदी जी की सरकार ने देश के गरीबों को आवास, महिलाओं को गैस कनेक्शन, घर-घर नल कनेक्शन के जरिए पानी पहुंचाने सहित विकास के अनगिनत काम किए। मोदी सरकार ने कश्मीर से 370 धारा हटया और राम मंदिर के निर्माण कराया। मोदी जी कहते हैं कि अभी ये सिर्फ ट्रेलर है। 2029 तक देश को विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था और 2047 तक भारत का विकसित बनाने का मोदी जी का लक्ष्य है। इसलिए आप सभी को जांजगीर लोकसभा प्रत्याशी कमलेश जागड़े को संसद में भेजना है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कांग्रेस की पूर्ववर्ती भूपेश सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि कांग्रेस की सरकार ने पांच साल सिर्फ भ्रष्टाचार किए है। कांग्रेस ने कोयला, शराब, डीएमएफ, नरवा-गुरुवा, चावल में घोटाला किए। भूपेश बघेल ने महादेव सट्टा एप के जरिए 508 करोड़ रुपए लिए और इस मामले पर उन पर एफआईआर दर्ज है। इनके भ्रष्टाचारी अधिकारी और कांग्रेसी नेता जेल की हवा खा रहे हैं। विष्णुदेव साय ने कहा--छत्तीसगढ़ में मोदी की गारंटी सांय-सांय पूरी हो रही है। ऐसे में कांग्रेसी चावल योजना बंद होने की अफवाह फैलाने में जुटे हैं। कहा-आयुष्मान योजना को लाभ अब 70 साल के बुजुर्गों को भी मिलेगा। इसके अलावा गरीबों को ब्याज मुक्त लोन दिया जाएगा। ये कांग्रेसी अब मोदी जी को मर जाए और मारने जैसी बात कर रहे हैं। लेकिन जनता भ्रष्ट कांग्रेस पार्टी को सबक सीखाएगी।

उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा- भाजपा की सरकार बनने के बाद छत्तीसगढ़ में विष्णुदेव साय की सरकार ने तीन से 4 महीने में मोदी गारंटी की अधिकांश वादों को पूरा कर चुकी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने आदिवासी समुदाय की बेटी को द्रौपदी मुर्म को राष्ट्रपति बनाया। साथ ही उन्होंने छत्तीसगढ़ के इतिहास में पहली बार एक आदिवासी के बेटे विष्णुदेव साय को मुख्यमंत्री बनाकर आदिवासी समाज के सम्मान को बढ़ाया। विजय शर्मा ने कहा-यहां जांजगीर चांपा की कांग्रेस के प्रत्याशी सरकारी सामुदायिक भवन पर ही कब्जा कर लिया है। दूसरी तरफ भाजपा की कर्मठशील और जुझारू प्रत्याशी कमलेश जांगड़े हैं, जो आपकी सेवा में सदैव तत्पर और उपलब्ध रहेगें। श्री शर्मा ने कहा--कांग्रेस की जब केंद्र में सरकार थी तो उस समय आतंकवाद चरम पर था। लेकिन मोदी सरकार आने पर आतंकवादियों को उनके घर में घुसकर मारने का काम किया। आज देश से आतंकवाद का सफाया हो चुका है। भाजपा प्रत्याशी कमलेश जांगड़े ने कहा कि हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महिलाओं, युवाओं सहित सभी वर्गों के हितों के लिए अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं संचालित की है। देश को विकसति राष्ट्र बनाने के लिए हमें संकल्पित होकर पीएम मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाना है। इसके लिए आप सभी को कमल पर बटन दबाना है।

स्वच्छ छवि, विशाल हृदय वह व्यक्ति धरणी धीर है
श्रम दिवस के दिन जन्में मोहन भैया श्रमवीर है

यशस्वी जननायक बृजमोहन अग्रवाल जी

को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं

1 मई

समस्त मित्रगण : अनूप वर्मा, चंद्रकांत बाबरिया, संतोष मिश्रा, प्रवीण बुरड़, महेन्द्र गोलछा, महेश कोचर, शांतिलाल बरड़िया, कमल गोलछा, तरल मोदी, नंदकिशोर बागड़ी, डॉ. कृष्ण कुमार डागा, नितिन ढोलकिया, सुभाष अग्रवाल, प्रदीप अग्रवाल, कीर्ति व्यास, प्रवीण गर्ग (बिल्लू), महेश लिंगराज, राजेन्द्र शुक्ला, अश्विन बटावीया, ललित जैसिंह, विजय दुग्गड़, अरूण खेतान, तारिणी आचार्य

स्वामित्वधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक रोहित खड़तकर द्वारा समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स ग्राम छाटा, पोस्ट देवादा, तहसील पाटन, जिला दुर्ग (छ.ग.), पिन-491111 से मुद्रित कर 65/1920, परशुराम नगर प्रोफेसर कालोनी, रायपुर (छ.ग.) पिन- 492001 से प्रकाशित। संपादक :- दामोदर राव, फोन नं.-0771-4218364, मो. 9303404360, ईमेल- samaydarshanraipur@gmail.com, RNI: CHHHIN/2018/76878, डाक पंजीयन /रायपुर संभाग/63/2022-24